अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 3 मार्च 2024

www.amritvichar.com

सदियों पहले विश्व में जब बड़ी-बड़ी सभ्यताओं की बात होती थी, तब भी महिलाएं गुलामी की दास्तां में जकड़ी थीं। इन्हीं में से कुछ महिलाओं ने अपने शोषण के खिलाफ आवाज उठाई जिसने कमाल किया। एक साहस का भाव और संदेश दूसरी महिलाओं तक भी पहुंचाया कि किसी भी तरह का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं करना है, यौन उत्पीड़न तो बिल्कुल नहीं। भारत सहित दुनिया के अलग-अलग देशों में महिला सुरक्षा के मद्देनजर कड़े कानूनों की वकालत की गई। भारत में 2013 में कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न अधिनियम को पारित किया गया था। पदोन्नति का लालच देकर किसी भी तरह का यौन शोषण करना, कार्यस्थल पर देर तक रोके रखना, अश्लील बातें करना, आपत्तिजनक संदेश या वीडियो भेजना भी यौन उत्पीड़न कानून के तहत आते हैं।

# हाथ से मिले हाथ तो आसां हो लड़ाई

अमृता पांडे
स्वतंत्र लेखिका, हल्द्वानी

### इंटरनेट की भूमिका

आज इंटरनेट के माध्यम से बड़ी संख्या में बच्चे यौन शोषण के शिकार बन रहे हैं। अज्ञानता वश वे अपनी अंतरंग तस्वीरें तक शेयर कर देते हैं। कृत्रिम मेधा के इस दौर में डीप फेक जैसे मामलों ने इसे और भी गंभीर बना दिया है। यूनिसेफ के अनुसार दुनियाभर में 30 लाख से अधिक बच्चे भी वेश्यावृत्ति से प्रभावित हैं।

## क्या कहती हैं रिपोर्ट्स और स्वास्थ्य एजेंसी

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार हर साल लगभग 10 लाख लोगों की तस्करी भी इसी उद्देश्य से की जाती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका जैसे विकसित देश में आज से लगभग डेढ़ दशक पहले तीन लाख के लगभग किशोर यौन पीड़ित थे। इन्हीं देशों के चलते यह एक वैश्विक मुद्दा बना। यूएनएफपीए यानी यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य एजेंसी के गठन का लक्ष्य भी महिलाओं और युवाओं के लिए यौन और प्रजनन अधिकार व विकल्प सुनिश्चित करना है, लेकिन परेशानी यह है कि यौन उत्पीड़न के लगभग 90 प्रतिशत मामले चुपचाप दफन हो जाते हैं। चीर हरण की कोई भी घटना शर्मनाक है। एक बेटी या बहन अपने पिता या भाई के, एक मां या पत्नी, पिता या पति के खिलाफ यौन हिंसा की शिकायत लेकर अगर थाने जाए तो इससे अधिक शर्मनाक और क्या होगा? दुनिया में लगभग 7.36 करोड़ स्त्रियां अपने साथी या बाहरी पुरुष से यौन हिंसा की प्रताड़ना सहती हैं। ऐसा अकेला मामला भी समाज के लिए गंभीर और चिंताजनक है। फिर अधिकतर मामले तो सामने ही नहीं आते। महिलाओं को घर में ही भय दिखाकर शिकायत करने से रोक लिया जाता है। थाने पहुंचने का साहस किया भी तो रिपोर्ट दर्ज होने में आनाकानी होती है। शराब सरकार के लिए राजस्व का स्रोत है, पुरुषों की मौज मस्ती का साधन, लेकिन महिलाओं के लिए प्रताड़ना का कारण रहा है। युद्ध का समय हो या महामारी का, महिलाएं हमेशा सॉफ्ट टारगेट रही हैं। महाभारत काल से वर्तमान समय तक देख लीजिए पुरुषों के आपसी संघर्ष का दंश महिलाओं ने शीलभंग के रूप में सहा है। भंवरी देवी कांड, मणिपुर कांड जैसे कई उदाहरण है, जहां महिलाओं से बर्बरता हुई और न्याय की गति धीमी रही। भंवरी देवी कांड के बाद विशाखा गाइडलाइंस आई, लेकिन इसका बहुत अधिक फायदा महिलाओं को नहीं मिला।

बीते समय महिला पहलवानों का मामला भी सुर्खियों में रहा, हालांकि बयान बदलने से कोई भी मामला कमजोर जरूर पड़ जाता है। पश्चिम बंगाल के संदेशखाली का मामला भी आजकल चर्चा में है। आशा कार्यकर्ताओं ने कई मामले बताए हैं जब फोन पर या प्रत्यक्ष रूप से उन्हें छींटाकशी, अभद्र टिप्पणी और शारीरिक हिंसा का सामना करना पड़ता है। घरेलू हिंसा, लिंग भेद और उत्पीड़न से बचने के लिए महिलाओं को अपने कानूनी अधिकारों के बारे में जानकारी रखनी जरूरी है। महिलाओं के प्रति अपराध घर, सार्वजनिक स्थलों, कार्य स्थल में तो होते ही हैं, इसके अलावा वे पति और लिव इन पार्टनर के द्वारा भी प्रताड़ित होती हैं।

## क्या है कानून की धारा और प्रावधान

देश में कानून की कमी नहीं है। आईपीएस की धारा 228 ए के तहत महिला जिला मजिस्ट्रेट या महिला पुलिस अधिकारी के सामने अकेले में अपना बयान दे सकती है और ऐसे में उसकी पहचान भी गोपनीय रखी जाती है।

महिलाओं को भावनात्मक सहयोग की जरूरत है। 2017 में विश्व की महिलाओं के द्वारा सोशल मीडिया पर मी टू आंदोलन चलाया गया था जिससे कई बड़े-बड़े लोगों की तथाकथित इज्जत पर बन आई थी। इस आंदोलन से प्रभावित होकर विश्वभर की महिलाओं ने अपने साथ हुई यौन हिंसा को सार्वजनिक करने का साहस किया। समय-समय पर लोग अपने अनुभव शेयर करते आ रहे हैं। दुनिया के कद्दावर नामों पर आरोप लगे और सत्ता तक जाने की नौबत आ गई। भारत में भी राजनेताओं पर आरोप लगे थे। हालांकि घरेलू और कम पढ़ी-लिखी कामगार महिला का मी टू से कोई सरोकार नहीं। वे अपने मालिकों के अत्याचार को सहती हैं, क्योंकि वे जो कमाती हैं, उसी से रात को घर का चूल्हा जलता है। उन्हें किसी तरह की कानूनी मदद की आस भी नहीं होती। कार्पोरेट जगत में काम करने वाली महिलाओं के पास यकीनन नाम और पैसा है, पर कभी-कभी अजीबोगरीब प्रस्ताव और व्यवहार उनका चैन लूटने के लिए काफी हैं। इसी वजह से कई महिलाएं नौकरी बदलती हैं या छोड़ देती हैं। चूंकि शिकायत के मामले सीनियर अधिकारियों से संबंधित होते हैं तो कार्यवाही से हाथ पीछे खींच लिए जाते हैं।

इस कानून के तहत किसी भी नियोक्ता को यह सुनिश्चित करना होगा कि कार्यस्थल में महिलाओं की सुरक्षा की पूरी व्यवस्था है। चेतावनी के तौर पर संबंधित आदेश की प्रति भी ऑफिस के किसी सूचना पट के साथ लगानी जरूरी है। इस कानून की धारा-4 के अनुसार कार्य स्थल पर किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के संबंध में शिकायत के निवारण के लिए आंतरिक शिकायत समिति का पुनर्गठन करना जरूरी है। भारतीय दंड संहिता यानी आईपीसी की धारा 354-ए, धारा 354-डी में महिलाओं के प्रति अश्लील इशारे, टिप्पणियों और पीछा करने पर कारावास और जुर्माने के प्रावधान हैं। यह धारा गैर जमानती है और अभियुक्त की गिरफ्तारी बिना किसी वारंट के हो सकती है।

इतिहास में जाएं तो उत्पीड़न को लेकर अलग-अलग देशों में कानून और प्रावधान भिन्न रहे हैं। कई कट्टर देश में तो महिलाओं की स्थिति बहुत ही बुरी रही है। एक समय ऐसा भी था जब यौन उत्पीड़न को महिलाओं के खिलाफ अपराध न मानकर पुरुष संपत्ति का अपमान माना जाता था। महिलाओं को गुलाम बनाकर दूसरे देशों में भेजने की किस्से सदियों पुराने हैं। इन गुलाम और उनकी संततियों का जीवन अधिकतर नारकीय होता था। यौन तस्करी का व्यापार भी सदियों से दुनिया में फल-फूल रहा है। आधुनिकता के आवरण में लिपटी सेक्स पर्यटन जैसी गतिविधियां मानसिक विकृति नहीं तो और क्या है। बाल वेश्यावृत्ति के मामलों में भी लगातार वृद्धि देखी जा रही है। एक अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक नेटवर्क है जिसने दुनिया के विभिन्न देशों को अपने पंजों में जकड़ रखा है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा के अधिकार को छीन लेता है। दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्वी यूरोप, लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई देशों में इसके मामले ज्यादा हैं। यौन शोषण के खिलाफ लड़ाई का उद्देश्य ही इस चेन को तोड़ना है। अपने आसपास ऐसी आपराधिक गतिविधियों की जानकारी गुप्त तौर पर ही सही पुलिस प्रशासन तक पहुंचानी जरूरी है। आज के समय में जागरूकता फैलाने के लिए कई प्लेटफार्म उपलब्ध हैं। यौन शोषण के मामलों में चौंकाने वाली बात तो यह है कि लगभग 35-40 प्रतिशत पीड़ितों में परिवार के किसी सदस्य या संबंधी के द्वारा ही शोषण किया गया होता है। बच्चे इस अपराध की गंभीरता को समझ नहीं पाते और अधिकतर महिलाएं भी इसके खिलाफ मुंह नहीं खोलतीं। आभासी दुनिया के माध्यम से डिजिटल यौन हिंसा या साइबर उत्पीड़न भी हो रहा है जिसमें हाशिए पर रहने वाले लोगों को आसानी से निशाना बनाया जाता है।

## विदेशों में शोषण के खिलाफ एकजुटता

वर्ष 2021 में ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं की सजगता से हजारों लोग यौन शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ एकत्र हुए थे। राजनीतिक सलाहकार रहीं ब्रिटिश हिंगिस ने अपनी कहानी सार्वजनिक करते हुए कहा कि अगर इस तरह का कृत्य संसद में हो सकता है तो और कहीं भी हो सकता है।

ऑस्ट्रेलिया के लगभग 40 शहरों में यौन हिंसा के खिलाफ विरोध रैलियां निकाली गईं जिसमें मेलबर्न, कैनबरा और सिडनी जैसे बड़े शहरों के अलावा छोटे शहर और कस्बे भी शामिल थे। विरोध प्रदर्शनकारियों ने काले कपड़े पहने थे। उनके हाथों में तख्तियां और बैनर थे जिसमें लैंगिक हिंसा में मारी गईं महिलाओं के नाम लिखे थे। 90 हजार से ज्यादा लोगों के हस्ताक्षर वाली एक याचिका भी सांसदों के सामने जवाबदेही की मांग के उद्देश्य से पेश की गई थी। इस दिन का इतना प्रभाव रहा कि यह दिन 4 मार्च जस्टिस के नाम से अंकित हो गया।

## आयोग और विभिन्न हेल्पलाइन

भारत की बात करें तो विभिन्न हेल्पलाइन हैं जिनके माध्यम से किसी भी तरह की यौन हिंसा की शिकायत की जा सकती है। जैसे वीमेन हेल्पलाइन नंबर 1090 या 1091, चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098, एंटी स्टॉकिंग सेल 1096, पुलिस कंट्रोल रूम 112, राष्ट्रीय महिला हेल्पलाइन नंबर 181 पर किसी भी तरह की यौन हिंसा के लिए शिकायत दर्ज की जा सकती है। राष्ट्रीय महिला आयोग या राज्य महिला आयोग भी महिलाओं की शिकायत को सुनने और निवारण के लिए वचनबद्ध है। सच्चाई है कि भारत में यौन उत्पीड़न कानून पर अमल उतनी तत्परता से नहीं होता जितना होना चाहिए। केवल कुछ ही मामले फास्ट ट्रैक में चलाए जाते हैं। संस्कृति मंत्रालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के तहत यौन शोषण के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इस तरह के कार्यक्रमों को मात्र औपचारिकतावश नहीं, बल्कि निष्ठा और संकल्प के साथ मनाने और आगे बढ़ाने की जरूरत है। पितृ सत्तात्मक समाज को चुनौती देना आज जरूरी है। जरूरत है रोजगार और शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की। सत्ता को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। दंड की जब बात आए तो सबके लिए समान कानून जरूरी है। कानून के पैर इतने लचीले भी न हो कि जिस तरफ चाहें, उधर मोड़ लिए जाएं। अधिकांश मामलों में शोषण करने वाला दबंग प्रकृति का, राजनीतिक और आर्थिक संरक्षण प्राप्त व्यक्ति होता है। अतः दबाव के तहत शिकायतें वापस ले ली जाती हैं, लेकिन महिलाओं के द्वारा इस भय को मन से निकालना जरूरी है। उनके परिजनों, परिचितों को पूरा सहयोग करना होगा। कुछ हिम्मत भरे फैसले निश्चित ही आगे चलकर नजीर बनते हैं। हालांकि डेढ़ दशक में इस दिवस की उपलब्धि विशेष तो नहीं कही जा सकती, लेकिन फिर भी काफी जागरूकता बढ़ी है। इस दिवस का लक्ष्य दुनिया को यौन शोषण के खिलाफ एकजुट करना है। इतिहास में हर तरह की महिलाएं हुई हैं जिन्होंने अपने साथ हुई नाइंसाफी और यौन हिंसा को अपने ही भीतर समेट कर रख लिया और दूसरी वह जिनकी हिम्मत से सत्ता भी कांपती थी। हमें इन पहली तरह की महिलाओं की मजबूरियों को समझते हुए, उनके समाधान की ओर बढ़ते हुए, दूसरी तरह की महिलाओं की हिम्मत से काम लेना होगा।

# महिला सशक्तीकरण और उनका स्वास्थ्य

दुनिया के अधिकांश हिस्सों और संस्कृतियों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की सामाजिक स्थिति थोड़ी हल्की है। यही वजह है कि महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, उनके उपचार और देखभाल पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। समय बढ़ता गया, लेकिन महिला सशक्तीकरण, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में बहुत ज्यादा सुधार नहीं हो सका। इसकी वजह से वह भेदभाव का शिकार होती रहीं। यही वजह है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और दुनिया के सभी देश लैंगिक असमानता को दूर करने के साथ महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करने के उपाय कर रही हैं। दुनिया की आबादी का इतना बड़ा हिस्सा होने और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद महिलाओं को उस प्रकार से स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल पाईं जिनकी वे वास्तविक हकदार थीं।

महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दों को बेहतर तरीके से समझा जाना चाहिए, क्योंकि उनका अच्छा स्वास्थ्य (या इसकी कमी) मनुष्यों की अगली पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाओं के स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भले ही दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की हो, फिर भी भारत सहित कई देशों में उनके स्वास्थ्य के मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कुछ कारक इस स्थिति को उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार हैं।

**सामाजिक-सांस्कृतिक कारण:-** विश्व के अधिकांश हिस्सों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को वह सामाजिक अधिकार नहीं मिल सके, जो मिलने चाहिए थे। इस लैंगिक असमानता ने महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक स्वतंत्रता और स्वास्थ्य सेवाओं को कमजोर बनाया है। दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं को अकेले यात्रा करने, स्वास्थ्य के लिए भी दूसरों पर आश्रित रहने, यहां तक कि परिवार नियोजन के मामले में भी अपने पक्ष को रखने का अधिकार नहीं है। समाज में लड़के को प्राथमिकता देने के चलते न केवल कन्या भ्रूण हत्या और शिशु हत्या बढ़ी है, बल्कि स्वच्छता, पोषण के मामले में महिलाएं आजीवन उपेक्षा का शिकार भी रही हैं।

**आर्थिक कारक :-** यूनाइटेड नेशनंस वूमेन और विश्व बैंक द्वारा 2013 में जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में गरीबी से जूझ रहे 767 मिलियन (76.7 करोड़) लोगों में एक बड़ा हिस्सा महिलाओं और बच्चों का है। गरीबी का सीधा असर स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त 2011 में हेल्थ केयर वुमेन इंटरनेशनल जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार काम के घंटों में दुनिया में दो-तिहाई हिस्सेदारी रखने वाली महिलाएं आर्थिक रूप से कुल आय का सिर्फ 10 फीसदी ही कमाती हैं।

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव
चिकित्सक, लखनऊ

वैज्ञानिक और चिकित्सा अनुसंधान 2003 में जर्नल ऑफ क्लिनिकल इंवेस्टिगेशन में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार चिकित्सा, उपचार और स्वास्थ्य संबंधी तकनीकों के आधुनिकीकरण के निर्धारण के लिए किए गए सर्वे में महिलाओं को कम आंका जाता है। ऐसे में महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए जरूरी अवयव कहीं न कहीं रह जाते हैं।

### एचआईवी / एड्स

जागरूकता के अभाव में इस बीमारी ने दुनियाभर में तेजी से अपने पांव फैलाए हैं। ह्यूमन इम्यूनोडिफिशिएंसी वायरस (एचआईवी) के पहले मामले के सामने आने के तीन दशक बाद भी अब तक इसके खतरे को कम नहीं किया जा सका है। युवा महिलाओं में इस संक्रमण का खतरा अधिक रहता है। यौन शिक्षा, कंडोम की लोगों तक पहुंच न होना, साथ ही सुरक्षित सेक्स के बारे में जानकारियों के अभाव के चलते इस संक्रमण का फैलाव तेजी से हुआ। लोगों को जागरूक कर इस संक्रमण को रोकने के व्यापक प्रयास किए जाने की आवश्यक है।

### यौन संचारित रोग

एचआईवी / एड्स और एचपीवी के अलावा, महिलाओं में गोनोरिया, क्लैमाइडिया और सिफलिस जैसे यौन संचारित रोगों के होने का खतरा होता है। चूंकि पुरुषों की तरह महिलाओं में इसके स्पष्ट लक्षण नहीं दिखते हैं, इसलिए इसका आसानी से उपचार नहीं हो पाता है। इन संक्रमणों से न केवल महिलाओं को स्वास्थ्य समस्याओं से दो चार होना पड़ता है, बल्कि ही उनके प्रसव और शिशु स्वास्थ्य में भी दिक्कतें पैदा हो सकती हैं। महिलाओं में एसटीआई से बचने के लिए इस प्रकार के कदम उठाए जाने चाहिए।

### यौन शिक्षा की जानकारी

कंडोम, गर्भनिरोधक के उपयोग से यौन संचारित रोगों को रोका जा सकता है। साथ ही कंडोम, गर्भ निरोधकों की आसानी से उपलब्धता को सुनिश्चित करना।

### महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा को रोकना

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार, 50 वर्ष से कम आयु वाली हर तीन में से एक महिला को परिचित या किसी अजनबी से यौन हिंसा का शिकार होना पड़ता है। हिंसा चाहे शारीरिक हो या यौन प्रकृति की, इसका महिला के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसे दूर करने के लिए निम्न विषयों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। बच्चों को यौन शिक्षा दें। पुरुषों और महिलाओं दोनों को यौन हिंसा को रोकने के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। प्रशासन और चिकित्सकों को महिलाओं के साथ होने वाले हिंसा के बारे में संवेदनशील बनाना।

### मानसिक स्वास्थ्य

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के मुताबिक अवसाद, चिंता और कई तरह की मनोदैहिक शिकायतें महिलाओं में अधिक देखने को मिलती हैं। इसका कई बार मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक असर देखने को मिलता है, जो जीवन को प्रभावित कर सकती है। यही कारण है कि महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है।

मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों के बारे में बातचीत कर उसके निदान और उपचार के बारे में चिंतन करें। इस तरह की समस्याओं से प्रभावित महिलाओं को सामाजिक स्तर पर सहायता प्रदान करें जिससे वह जल्द से जल्द इससे बाहर आ सकें।

### गैर-संचारी रोग

महिलाओं में गैर-संचारी रोगों जैसे मधुमेह, हाई ब्लड प्रेशर, मोटापा आदि तेजी से फैल रही बीमारियां हैं। इनकी रोकथाम के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इन बीमारियों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता फैलाना। इससे लड़ने के लिए उचित उपचारों के बारे में जानकारी देना। लड़कियों और महिलाओं को उचित पोषण, व्यायाम और मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा जीवनशैली को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करना। सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों और दवाओं की लोगों तक आसान पहुंच को सुनिश्चित करना।

## कम उम्र में होने वाली समस्याएं

आजकल कम उम्र से ही लड़कियों को जीवनशैली से जुड़ी समस्याएं होने लगती हैं। भविष्य में यह बड़ी बीमारी का रूप भी ले सकती हैं। उचित पोषण और स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारियों के अभाव में उन्हें कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे एसटीआई, यूटीआई, एचआईवी और कई तरह की प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य चुनौतियां उनके सामने खड़ी हो सकती हैं। बालिकाओं को उनके स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित करें। माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वह लड़कियों को स्वास्थ्य और सुरक्षित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराएं। स्वास्थ्य सुविधाओं की आसानी से पहुंच उपलब्ध कराना।

## उम्र के साथ होने वाली समस्याएं

विकासशील समाज में उम्र बढ़ने के साथ महिलाएं काम के लिए घर से बाहर जाना बंद कर देती हैं जिससे उनके लिए पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और इससे जुड़ी सेवाओं का लाभ लेना मुश्किल हो जाता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ महिलाओं में पुरानी गठिया, ऑस्टियोपोरोसिस, मोतियाबिंद, ग्लूकोमा और गुर्दे की बीमारी होनी आम समस्या है। स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने जरूरी हैं।

# कश्मीर की मीरा: लल्लेश्वरी

डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

यों तो मीरा,मीरा है और ललद्यद,ललद्यद है। दोनों ही नारी हैं। मीरा प्रेमभक्ति के उस बिन्दु तक पहुंचीं,जहां वह कह सकीं कि-माई मैंने गोबिंद लियौ मोल। प्रेम की वह अवस्था, जहां भगवान बिकता है और भक्त उसे खरीद लेता है। दूसरी ओर ललद्यद हैं,जो आगम-उपासना अथवा योग के मार्ग से उस बिन्दु पर पहुंच सकीं,जहां उन्होंने कहा-उठो रानी,अर्चना के लिए। राजा शिव हैं और रानी (ललद्यद) शक्ति है। अद्वैतवादिनी जी ने तो ललद्यद को भी प्रेमदिवानी लल्ल मैं निकली, ढूंढते बीते दिन और रात लिखा है। मीरा राजस्थान की हैं तो ललद्यद कश्मीर की। मीरा की भाषा भी लोकभाषा है और ललद्यद की उपासना की भाषा भी लोकभाषा है।

अपने ससुराल में मीरा को भी यातना मिली थी,तो ललद्यद को भी उनकी सास ने बहुत कष्ट दिया था। कश्मीरियों के घर-परिवार में ललद्यद के वाख उसी प्रकार से प्रचलित हैं,जिस प्रकार हिन्दी-प्रदेशों में कबीर, तुलसी और मीरा आदि की वाणी। मीरा भी लोकजीवन और लोकमानस में प्रतिष्ठित हैं तो ललद्यद भी लोकमानस में प्रतिष्ठित हैं। ललद्यद के वाख (वाक्) कश्मीरी -लोकमानस की वाणी है,सम्मानित और प्रामाणिक। शेख नूरुद्दीनवली अथवा नुंदऋषि,जिन्हें कश्मीर में ऋषिपंथ का प्रवर्तक माना जाता है,वे लल्लेश्वरी के ही शिष्य थे। अतिरिक्त अन्य सूफी कवियों के काव्य में भी लल्लेश्वरी के वाखों का व्यापक प्रभाव स्पष्ट है। ललद्यद का जन्म श्रीनगर के पास के गांव में सन् 1335 में हुआ। उस समय के रिवाज के अनुसार बहुत कम उम्र में ही ललद्यद का विवाह हो गया,ससुराल में ललद्यद को प्रताड़ना सहनी पड़ी और उस पीड़ा ने ललद्यद को बाहर के जगत से अंतर्जगत की यात्रा की ओर मोड़ दिया। ललद्यद ने सेदबोय से शैव-दीक्षा ली और अध्यात्म में रम गई। पति ने ललद्यद को पहचाना तो था,लेकिन तब पहचाना जब वे सांसारिकता का अता-पता भूल चुकी थीं। प्रो. अद्वैतवादिनी कौल ने एक प्रसंग उद्धृत किया है कि पति गुरु स्यदबोय के यहां चले गए और तीनों के बीच चर्चा हुई कि संसार में सर्वोत्तम प्रकाश, तीर्थ, मित्र और सुख क्या है?

पति ने कहा-चंद्रस् ह्युव न प्रकाश कांह, गंगि ह्युव न तीरथ कांह। बान्धव ह्युव न बंधो कांह, राञि ह्युव न सोख कांह॥ "चंद्रमा के समान कोई प्रकाश नहीं,गंगा के समान नहीं कोई तीर्थ। बान्धव के समान कोई मित्र नहीं,पत्नी के समान कोई सुख नहीं॥"

गुरु ने कहा-अछ्यन ह्युव न गाश कांह,कोट्यन ह्युव न तीरथ कांह। चंदस ह्युव न बंधो कांह,अरिस जुवस ह्युव न सुख कांह॥

"दृष्टि (देखने की शक्ति) के समान कोई प्रकाश नहीं, घुटनों (की शक्ति) के समान कोई तीर्थ नहीं। धन के समान कोई बंधु नहीं,स्वास्थ्य के समान कोई सुख नहीं॥" ललद्यद ने कहा - मयस ह्युव न प्रकाश कांह,पयस ह्युव न तीरथ कांह। दयस ह्युव न बंधो कांह,भयस ह्युव न सोख कांह॥ "(परम) रस' सा कोई प्रकाश नहीं,(उस) रस की प्राप्ति सा कोई तीर्थ नहीं। परमात्मा सा कोई मित्र नहीं,भय के समान कोई सुख नहीं॥"

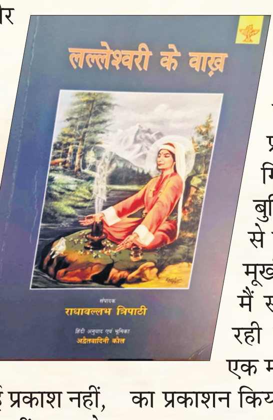


लल्लेश्वरी परम रस की उपासिका हैं। लल्लेश्वरी की वाक् उनके आध्यात्मिक-जीवन की अभिव्यक्ति है। पन जन हरान पोहनि बावलाह,न्यषबोद आख वुछुम वाजस मारान,तन लल बो प्रारान छ्यन्यम न प्राह। जैसे शरद ऋतु में पत्ते सूखकर गिर जाते हैं,उसी प्रकार से जब से मैंने बुद्धिमान को भूख से मरते देखा है,जब से मैंने एक सूपकार (कुशल शिल्पी) को मूर्ख व्यक्ति से पिटते देखा है। बस तभी से मैं सांसारिक-मोह छूटने का इंतजार कर रही हूं। साहित्य अकादमी ने अभी-अभी एक महत्वपूर्ण पुस्तक "लल्लेश्वरी के वाख" का प्रकाशन किया है। इसमें उनके 60 वाख हैं जिनका पद्यानुवाद डा.अद्वैतवादिनी कौल (पूर्व विभागाध्यक्ष कलाकोश आईजीएनसीए) ने किया है। डा. कौल ने प्रारंभ में 35 पृष्ठों में भूमिका लिखी जिसमें लल्लेश्वरी के जीवन और उनके परिवेश के साथ ही उनकी वाणी के संकलन और संपादन का इतिहास है। प्रो. अद्वैतवादिनी कश्मीरी भाषा और साहित्य की अधिकारी विदुषी और कश्मीरी शैव-दर्शन की गंभीर अध्येता हैं। यह विरासत उनको अपने पिताजी श्री जानकी नाथ कौल से प्राप्त हुई है जिनके द्वारा संपादित आगमग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं,उनका नाम ही उनकी वंश परंपरा का प्रमाण है। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एशिया के देशों के बीच सांस्कृतिक प्रक्रिया पर आयोजित सेमीनार में जब वक्ता के रूप में उनके नाम की घोषणा हुई तब अध्यक्षता कर रहे डा.कर्ण सिंह ने इस नाम को लेकर ही प्रसन्नता और विस्मय का वाक्य कहा था। यह विरासत ही है जिसके आधार पर अद्वैतवादिनीजी ने लल्लेश्वरी की वाणी में त्रिकदर्शन की समीक्षा की है। ललद्यद या लल्लेश्वरी की वाणी में कश्मीर का मूल स्वर है। कश्मीरी देश या विदेश में जहां-जहां भी हैं,उनके व्यष्टि और समष्टि जीवन में वह स्वर जिजीविषा का स्वर है। प्रकाश और प्रेरणा का स्वर है,यही कारण है कि प्रो. अद्वैतवादिनी कौल के लिए यह हृदय का विषय है। संस्कृत साहित्य के सुविख्यात विद्वान डॉ. राधा वल्लभ त्रिपाठी इस पुस्तक के संपादक हैं। अपने संपादकीय में उन्होंने कश्मीर की दार्शनिक पृष्ठभूमि और परंपरा का विवेचन किया है। उन्होंने विस्तार से बतलाया है कि कश्मीर भारतीय संस्कृति और दर्शन का महिमामय केंद्र था।

## कविता

### वो जोड़े

वो जोड़े
आते चमचमाती गाड़ी में
हंसते गाते गुनगुनाते
मेरा मन ललचाता -
उनके साथ मिल
मैं भी गुनगुना लूं खुशियां
कहते हैं जो शिद्दत से चाहा
जाता है
मुमकिन हो जाता है -
वो पास आए
हम पास आए
वो मुस्कुराए
हम मुस्कुराए -
फिर मिल हमने
नाचा गाया
अपनी अपनी कहानी सुनाई
तब हमने जाना
उनके जीवन में भी हैं दु:ख
अनेक
जीवन में उनके हैं बढ़कर
किस्से एक से एक-
दु:ख सबको मांजता जरूर है
अमीर हो या गरीब
सभी को आजमाता जरूर है
नाचना गाना गुनगुनाना
नहीं भगा पाते दु:ख को
बस कुछ पल के लिए
दु:ख को भुलाता जरूर है।

सीमा राय द्विवेदी
लखनऊ

### प्यार

प्यार हमारे जीवन में
दिखा नहीं वैसे
जैसे पानी की सतह पर
तैरता दिखता है
तीसी का तेल

प्यार हमने
वैसे भी नहीं किया
जैसे हिन्दी की
बंबइया फिल्मों में करते हैं
हीरो-हीरोइन

प्यार की गरमाहट से
भरे रहते थे हम
हर वक्त हर मोड़ पर
जिंदगी को बनाते हुए
कुछ और खूबसूरत
बिना किसी शोर-शराबे के

प्यार हमारे लिए
गुलामी नहीं थी
आजादी भी नहीं थी
जरूरत से ज्यादा

प्यार करते हुए ही
बनाए हमने
तिनका-तिनका जोड़कर घोंसला

दाने ले आए दूर देश से
उसके अंदर

हर मौसम का किया मुकाबला

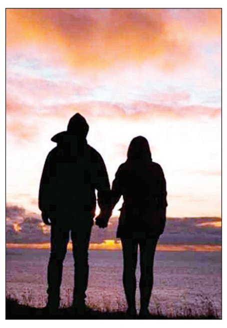

साथ-साथ लड़े
हंसे-रोए साथ-साथ
हर मोर्चे पर

कई बार सोचा हमने
अलग होने के बारे में
पर हमेशा लगा कि
मुमकिन नहीं
अलग होना
पानी से मछली का।

चंद्रेश्वर
सेवानिवृत्त प्रोफेसर,लखनऊ

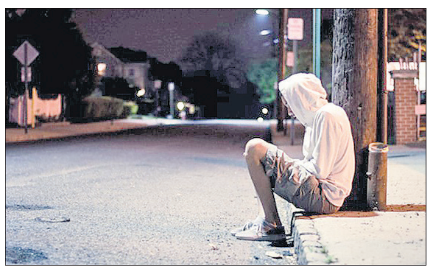

### गीत

व्यस्त सड़क के आसपास ही
रहता है
एकाकीपन भी।

बिलख रही यादों के तन पर
ढाढ़स की
पुचकार नहीं है,
चलकर पीछे ही मरना है
आगे का
अधिकार नहीं है,
उलझी कतरन में खोया है
नए थान का
सुलझा मन भी।

नई राह का पता पुराना
खोज नहीं है
मात्र अनुकरण,
हितोपदेश समस्या ही है
निराकरण है
हित का प्रसरण,
शांति पाठ का कोलाहल ही
सभागार की
है अड़चन भी।

बड़ी नींव के छोटे घर में
समाधान
ही है कठिनाई,
कर्म-भाग्य की चर्चा में भी
इस पर होती
रही लड़ाई,
निष्कर्षों में एक नहीं है
है दोनों में
परिवर्तन भी।

विवेक कुमार
शाहजहांपुर

## कहानी

# विकास रथ का पहिया

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

राधे लाल उर्फ राधू छह महीने के अज्ञात वास के बाद जब रात को दस बजे दबे पांव अपने गांव पहुंचा तो उसके अम्मा-बाबू की खुशी की सीमा नहीं रही। राधू को खाना खिलाकर उसकी अम्मा ने पूछा- "कहां गायब हो गए थे तुम? हम दोनों तुम्हारे लिए दिन-रात परेशान रहते थे?" राधू हंस कर बोला -"मजबूरी में मैं गांव छोड़ कर भाग गया था अम्मा। रोज-रोज परधान की बेगार करते-करते मैं ऊब गया था। सौ उस दिन गुस्से में मैंने उनकी बेगार करने से मनाकर दिया था। यह सुनते ही प्रधान का छोटा लड़का गाली बकते हुए लाठी लेकर मेरी ओर बढ़ा तो मैंने आंख बंद करके भागना शुरू कर दिया। वह कुछ दूर तक तो मेरे पीछे दौड़ा मगर फिर वापस लौट गया। मैंने सोचा कि अब गांव लौटना ठीक नहीं है। मैं चुपचाप रेलगाड़ी में चढ़ गया और बिना टिकट यात्रा करते हुए राजधानी पहुंच गया।"

" वहां क्या काम करता था?" राधू के बाबू शिव लाल ने पूछा। "पहले कुछ दिन तो मजदूरी किए। फिर जब कुछ पूंजी जोड़ ली तो एक कॉलोनी के आगे फुटपाथ पर सब्जी की दुकान लगा ली।"- राधू ने उत्तर दिया। फिर कुछ रुक कर वह बोला- "शहर में बहुत बड़े-बड़े लोग रहते हैं बाबू। वे सब्जी का भाव-ताव नहीं करते,सीधे इशारे से बताते हैं कि आधा किलो यह तौल दो और एक किलो वह तौल दो। बस उन्हें सब्जी ताजा और बढ़िया चाहिए। सब सामान तौलवा कर कीमत पूछते हैं और जो दाम जोड़कर बता दो, उतना दाम बिना कोई पूछताछ किए हुए देकर आगे बढ़ जाते हैं।"

"तब तो बहुत अच्छी कमाई हो जाती होगी?" "और क्या बाबू। यहां तो नरक में फंसे थे। मुफ्त में बेगार कराना ही जानते हैं यहां के लोग और देने के लिए बुरी बुरी गालियां ही हैं इनके पास। वहां के आदमी तो देवता हैं देवता।" कुछ देर तक वे दोनों गांव-गिरांव की बातें करते रहे। फिर उचित अवसर जानकर राधू ने कहा- "बाबू,मैं तो कहता हूं कि अबकी तुम लोग भी चलो मेरे साथ। तुम सब्जी की दुकान संभालना और मैं जूस का ठेला लगा लूंगा। फलों का जूस भी खूब बिकता है वहां। शायद ही कोई उस कॉलोनी में ऐसा हो,जो रोज जूस न पीता हो।"

शिव लाल ने अपने बेटे के प्रस्ताव पर तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की मगर वह काफी देर तक इस प्रस्ताव पर विचार करता रहा और फिर सो गया। सुबह राधू उठा तो चाय-नाश्ता के बाद उसने अपने बैग से एक बढ़िया साड़ी निकालकर अपनी अम्मा को दी और एक मर्दाना धोती और कुर्ता का कपड़ा अपने बाबू को दिया। शिव लाल और उसकी पत्नी बहुत देर तक बेटे द्वारा लाए गए वस्त्र फटी आंखों से देखते रहे।

शिव लाल ने राधू को सलाह दी कि वह दिन में घर से बाहर न निकले क्यो कि अगर प्रधान जी को उसके वापस आने की जानकारी हो गई तो खतरा हो सकता है। शिव लाल ने यह भी घोषणा कर दी कि आज रात के अंधेरे में वह भी राधू के साथ शहर जाएगा और उसकी अम्मा भी जाएगी।

रात के अंधेरे में ये तीनों लोग चुपचाप रेलवे स्टेशन पहुंचे और रेल में बैठकर शहर आ गए। शहर में राधू ने अपनी सब्जी की दुकान शिव लाल के हवाले कर दी और खुद उसी दुकान के पास जूस का ठेला लगाने लगा। दोनों की मेहनत और ईमानदारी का फल उन्हें यह मिला कि कॉलोनी के अधिकांश लोग उनके पक्के ग्राहक हो गए और उन दोनों के व्यापार में उत्तरोत्तर तरक्की होती गई।

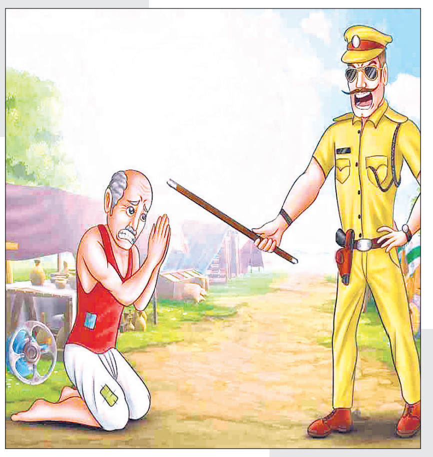

एक दिन दोपहर में खाकी वर्दी में कुछ लोग आए और उन्होंने कहा -"कल से यहां तुम लोग दुकान मत लगाना। देश-विदेश से बड़े-बड़े नेता और अधिकारी यहां "सेवा संस्थान" में मीटिंग के लिए आने वाले हैं। उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सड़कों पर किसी को रुकने नहीं दिया जाएगा।" उनके जाने के बाद राधू ने इधर-उधर घूमकर जानकारी ली तो यह पता लगा कि प्रदेश सरकार द्वारा एक "निवेश मेले" का आयोजन किया गया है,जो तीन दिन तक चलेगा। इस निवेश मेले में देश-विदेश के अनेक उद्योगपति, मंत्री गण, राजनेता, विदेशी राजदूत आदि आएंगे। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री भी आएंगे। इस मेले में अनेक देशी और विदेशी सेठों द्वारा उद्योग लगाने हेतु अनुबंध किए जाएंगे जिससे देश और प्रदेश का तेजी से विकास होगा।"

पुलिस ने शाम को वहां खड़े होकर सभी चाय, पान,फल,सब्जी आदि की दुकानें हटवा दीं। अगले दिन सुबह नौ बजे राधू और शिवलाल सब्जी मंडी से फल और सब्जियां खरीदकर लौटे तो राधू ने सारा समान अपने पुराने स्थान पर रख दिया और शिवलाल से बोला- "बाबू, तुम यहीं रुको, मैं घर से ठिलिया ले आऊं, फिर यहां से कहीं दूर चल कर दुकान लगाएंगे।" राधू के जाने के बाद पुलिस की एक जीप उधर से गुजरी। उसमें से एक दरोगा और दो सिपाही उतरे। सिपाहियों ने राधू द्वारा लाया गया सारा सामान नाली में फेंक दिया। शिव लाल हाथ जोड़कर उन्हें रोकता ही रह गया। उसने यह भी बताया कि उसका लड़का ठिलिया लेने घर गया है ताकि यह सामान ठिलिया में रखकर यहां से दूर चले जाएं। मगर दरोगा ने गालियां बकते हुए कहा - "साले मेरी नौकरी खाएगा। पीछे आई.जी. साहब निरीक्षण करते हुए आ रहे हैं और तू बातें बना रहा है। दरोगा ने शिवलाल पर बेंत से कई प्रहार कर दिए। राधू जब ठिलिया लेकर लौटा तो अपने पिता के शरीर पर चोटें देख कर वह रो पड़ा। वह शिव लाल को ठिलिया में डालकर अस्पताल ले गया। वहां पता लगा कि शिवलाल का दायां हाथ टूट गया है।

तीन दिन बाद शिवलाल हाथ में प्लास्टर चढ़वा कर जब वापस कमरे पर लौटा तो दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए चारपाई पर लेट गया। राधू ने घर में छा गई मायूसी को दूर करने के लिए टी.वी. खोल दिया। टी.वी. पर विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत निवेश हेतु घोषित धनराशि और विभिन्न योजनाओं से संबंधित समाचार प्रसारित हो रहे थे।

टी.वी. पर निवेश मेले की सफलता और भविष्य में संभावित आर्थिक प्रगति का समाचार सुनकर शिवलाल अपनी पत्नी से बोला- "सरकार तो अपने प्रदेश और देश की तरक्की के लिए विकास रथ ला रही थी, मगर मैं उस विकास रथ पर सवारी करने के बजाय उसके पहिए के नीचे ही आ गया। अब जिसके भाग्य में दुख ही लिखे हों उसे उन दुखों से कौन उबार सकता है।" अगले दिन के अखवार में मुख्य पृष्ठ पर यह खबर प्रकाशित हुई - "प्रदेश में करोड़ों रुपए के निवेश हेतु समझौते हुए"। इससे प्रदेश के आर्थिक विकास को नई रफ्तार मिलेगी। हजारों नवयुवकों को रोजगार मिलेगा।" जिसे देखकर शिवलाल बहुत मायूसी से बोला- "संसार में है तो सब कुछ,मगर यह सब कुछ सबके लिए नहीं है।" और खिसियानी हंसी हंसते हुए उसने सिर से पैर तक चादर ओढ़ ली।

# आखिरी चीख

ममता सोनी
राष्ट्रीय अध्यक्ष, कला भारती फाउंडेशन

"दीदी वह हमारे पड़ोस में भारत अंकल थे न उनकी डेथ हो गई है।" बचपन की दोस्त मीनू का फोन आया तो अचानक भारत अंकल और डब्बू का चेहरा नजरों के सामने घूमने लगा। भारत अंकल बहुत कम बोलते थे और हमेशा नजरें झुकाए घर का कुछ न कुछ काम करते रहते। डब्बू गली का एक शरारती कुत्ता था,जो घरों में घुसकर आतंक मचाया करता था। आतंक तो क्या उस मासूम को अपने पेट भरने से मतलब था। जहां किसी की रसोई का पता चल जाता डब्बू वही चुपके से दबे पांव पहुंच जाता। अगर किसी की रसोई का दरवाजा खुला रह गया तो डब्बू की पार्टी हो जाती। देखने में डब्बू बड़ा घमंडी और अड़ियल लगता था। अक्सर कुत्ते खाना देने वाले को प्यार की नजर से देखते हैं और दुम हिलाने लगते हैं,परंतु डब्बू को देखकर ऐसा लगता था कि वह खाने पर अपना पूरा अधिकार समझता था। उसको कभी दुम हिलाकर आभार व्यक्त करते नहीं देखा। उसके आंतक के कारण भारत अंकल काफी परेशान रहते थे। एक दिन शाम को दादी के साथ जब मैं स्कूल से वापस लौटी तो गली में काफी भीड़ एकत्रित थी। दादी के पूछने पर पता चला कि आज भारत अंकल ने डब्बू की बहुत पिटाई की है और मैंने देखा कि वह अभी भी उसे मारे जा रहे थे और मेरी नजरों के सामने डब्बू के मुंह से आखिरी चीख निकली और वह वहीं पर ढेर हो गया। उस दिन के बाद मुझे भारत अंकल से सख्त घृणा हो गई।

आज भारत अंकल की मृत्यु का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। सामने फोन पर एक वीडियो चल रहा था जिसमें पंडित जी कह रहे थे कि मृत्यु के पश्चात हमारे सूक्ष्म शरीर को अपने दुष्कर्मों के कारण अत्यधिक यातनाएं झेलनी पड़ती हैं। अचानक ख्याल आया कि भारत अंकल भी क्या इस समय यातना झेल रहे होंगे।

## व्यंग्य

# कविवर का ब्याह

रेखा शाह
बलिया

कविवर राम सनेही जी बहुत ही स्नेही इंसान हैं। पर धरती पर रहने के लिए सिर्फ अपने नाम में स्नेह का रहना जरूरी नहीं है। रिश्तों से भी स्नेह की जरूरत पड़ती है और कविवर जी पत्नी के स्नेह से अभी भी महरूम थे। क्योंकि वह कुंवारे थे और कविवर जैसों के लिए कुंवारा और बेचारा एक ही शब्द है,मायने अलग हैं। कविवर की ब्याह की उम्र निकली जा रही थी और ब्याह का भूत कलेजे में हूक बनकर रह रहकर उठ ही जाता था। अब वह जमाना नहीं रहा की आप सोचे और आपका ब्याह हो जाए। आजकल ब्याह होने में बड़े-बड़े पर्वत और पहाड़ खड़े हैं जिनको पार करना सबके लिए आसान नहीं हैं और कविवर तो सुकोमल मनुष्य होता है। उसके लिए तो और भी कठिन होता है। कहां फूल-तितली, बाग-बगीचे और कहां पर्वत-पठार काफी विरोधाभास वाली स्थिति कविवर के लिए हो गई थी।

कविवर जब भी किसी विवाह समारोह में जाते तो घुमा-फिरा कर सब के कानों में यह बात डाल ही देते कि अभी हम छड़े-छकड़े घूम रहे हैं,पर उनके रिश्तेदार उनसे भी महाघाघ थे। अफसोस तो उनके लिए खूब जताते थे,लेकिन कहीं पर बात नहीं चलाते थे। कोई रिश्तेदार इतना दिल वाला नहीं था कि उनके माथे पर मौर सजवाने का कष्ट करता। हर शादी का सीजन आने पर उन्हें अपने विवाह न होने की पीड़ा चरमोत्कर्ष पर पहुंचती नजर आती,पर माथे पर मौर नहीं सज पाता। सबको सरकारी दामाद चाहिए। कौन जाए इतना बड़ा रिस्क उठाए की एक कवि को अपना दामाद बनाएं। लिखने-पढ़ने जैसे मुफ्त के काम वाले को अपनी आज के जमाने की मॉडर्न कन्या देकर खुद अपना ही बैंड बजवाए। आजकल माता-पिता भी जानते हैं कि कन्या का हाथ वहीं पर पीला करना है जहां पर कन्या को अपना हाथ घर के काम धाम करने के लिए गीला न करना पड़े।

इस तरह बेचारे बिन बियाहे ही हर बार रह जाते। उन्होंने सोचा बैठने से काम तो चलेगा नहीं क्यों न कलम के सहारे ही अच्छा सा इश्तिहार बनाकर दिया जाए। शायद कोई पसीज जाए और अपनी सुशील सुकोमल कन्या का हाथ मेरे हाथ में दे दे। उन्होंने खूब सुंदर इश्तिहार बनाया और नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में अपना नंबर लिख दिया। कुछ दिनों बाद दो-चार जगह से रिप्लाई आया,पर जैसे ही उन्हें पता चला कि लड़का कवि है तो सबके मुंह का स्वाद ऐसे बिगड़ जाता है जैसे उन्होंने कच्चा करेला चबा लिया हो। उनका साफ साफ कहना था सरकारी चपरासी चलेगा पर मुफ्त का लेखक नहीं, अब तो इज्जत का भी कबाड़ा होने लगा। घर के ड्राइंग रूम में लगे हुए सारे सम्मान पत्र ऐसा लगता था कि उन्हें चिढ़ाने लगे हैं। ब्याह का मामला तो अधर का अधर में ही लटका रहा। जब चारों तरफ से न सुनने को मिला तो तब कविवर के मुखारविंद से पीड़ा जनित यह पंक्तियां फूट पड़ी- कलम नहीं तू सौतन है पर बसता तुझ में मेरा मन है /कैसे तुझको छोड़ दूं बता दे,तू ही पीड़ाओं की सांझन है।

आखिरकार चारों तरफ से थक हार कर इस वैवाहिक सीजन में भी कविवर कुंवारे ही रह गए। पेपर में खोज-खोज कर सरकारी नौकरी की विज्ञप्ति को फॉर्म भरने के लिए मार्क करने लगे हैं। आखिर घर में घरनी चाहिए तो सरकारी नौकरी चाहिए। यह बात उनके दिल और दिमाग में पूरी तरह बैठ चुकी है। अपनी नौकरी और अगले शादी सीजन का बेसब्री से इंतजार करने लगे हैं। शायद भाग्य पलट जाए और उनके हाथों में भी मेहंदी और माथे पर मौर सज जाए। अब जब भी एग्जाम देकर आते हैं तो उन्हें शादी के सुहाने सपने और अपने घर में पायल की रुनझुन सुनाई देने लगती है।

## लघुकथा

# स्टेटस सिंबल

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
कर अधिकारी, बलरामपुर

"मम्मा! आज स्कूल में आदित्य फाइव हंड्रेड रूपीज वाला पेंसिल बॉक्स लाया था। मुझसे कह रहा था कि तुम्हारा पेंसिल बॉक्स तो बड़ा चीप है। मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा मम्मा! प्लीज पापा से कहकर मेरे लिए भी फाइव हंड्रेड वाला पेंसिल बॉक्स मंगवा दीजिए न!" नन्हा अलभ्य मां से मनुहार करते हुए बोला। "बेटा! पेंसिल बॉक्स तो पेंसिल बॉक्स है। उसका काम तुम्हारी पेंसिल, इरेजर और शार्पनर को सुरक्षित रखना है। इसके अलावा और कुछ नहीं। तुम्हारा पेंसिल बॉक्स तो कितना कलरफुल है। आदित्य का इतना सुंदर नहीं होगा।" मां ने अलभ्य को समझाने की कोशिश की। "मगर मम्मा! कल अगर फिर आदित्य ने मुझे चिढ़ाया,तो मुझे बहुत बुरा लगेगा। वह कह रहा था कि उसका पेंसिल बॉक्स उसका स्टेटस सिंबल है। स्टेटस सिंबल क्या होता है मम्मा?"

"हे भगवान! तुम लोगों को इतनी बड़ी-बड़ी बातें कौन सिखाता है?" मां ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। "बताइए न मम्मा! स्टेटस सिंबल क्या होता है?" अलभ्य ने पुनः सवाल किया।"बेटा! लोगों का रहन-सहन,खान-पान,पहनावा आदि उनकी इनकम पर डिपेंड करता है। इसी को स्टेटस कहते हैं,जो चीजें लोगों की हाई लिविंग को शो करतीं हैं,वे स्टेटस सिंबल कहलातीं हैं। जैसे महंगी कार, ब्रांडेड कपड़े, ब्रांडेड शूज।" मां ने अलभ्य की जिज्ञासा शांत करने की कोशिश की,"लेकिन बेटा! संतोष सबसे बड़ा धन है। अपने स्टेटस को ऊंचा करने के लिए हम गलत तरीके अपनाएं या दूसरों को नीचा दिखाएं,यह बहुत गलत बात है।" मां ने अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए कहा ताकि नन्हें अलभ्य के मन में स्टेटस को लेकर कोई भ्रांति उपजने न पाए। "समझ गया मम्मा! उसके पापा बड़े बिजनेसमैन हैं। इसलिए महंगी चीजों पर पैसे खर्च कर सकते हैं। बाकी अधिकतर बच्चों के पेंसिल बॉक्स तो मेरे जैसे ही हैं। पर क्या बाकी बच्चों का स्टेटस हाई नहीं है मम्मा?" अलभ्य ने अपने मन की जिज्ञासा मां के समक्ष रखी। "बेटा! पैसे तो किसी के पास कभी कम कभी ज्यादा हो सकते हैं। पर वास्तविक स्टेटस उसके विचार,शिक्षा और अन्य लोगों से उसके व्यवहार से बनता है। लाल बहादुर शास्त्री जो हमारे देश के प्रधानमंत्री थे, उनके पास तो सिर्फ दो जोड़ कपड़े रहते थे,पर उनकी यह सादगी और देश के प्रति समर्पित विचार ही उनके कद को ऊंचा करते थे।" मां ने इस बार उदाहरण देकर समझाया। "ठीक है मम्मा! समझ गया मैं। ऐसे ही तो बापू भी थे,जो अपनी जरूरतें सीमित रखने का संदेश देते थे। मैम ने हम लोगों को बताया था। उन्होंने इसीलिए सिर्फ धोती और लंगोटी ही पहनना शुरू कर दिया था।"

"हां बेटा! सही समझ रहे हो तुम। धोती और लंगोटी ही उनका स्टेटस सिंबल था। वो विश्व में सच्चाई और सादगी के सबसे बड़े ब्रांड हैं जिसे सारी दुनिया पूज रही है।" मां मुस्कराई और अलभ्य के माथे को चूम लिया।

# दुनिया के समृद्ध देशों में एक सिंगापुर

**मैं जब सिंगापुर गया था तो उसे देखता रह गया। मैं दुनिया के तमाम बड़े शहर यथा मेलबर्न, लंदन, पेरिस,शंघाई, न्यूयार्क, वाशिंगटन आदि आदि घूम चुका था और सिंगापुर तमाम मायनों में उनके आगे बढ़ता शहर लगा। यह जानकर मुझे और भी ताज्जुब हुआ कि वर्ष 1963 में ही फेडरेशन ऑफ मलाया के साथ इसे विलय किया गया था, पर जिसे मलेशिया भी अपने साथ रखने का इच्छुक नहीं था। आधुनिक सिंगापुर के इतिहास की शुरुआत 1819 में हुई थी जब एक अंग्रेज सर थॉमस स्टैमफोर्ड रैफल्स द्वारा इस द्वीप को खरीदा गया और एक ब्रिटिश बंदरगाह की स्थापना की गई थी।**

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापान ने सिंगापुर को अपने अधीन कर इसे काफी तहस-नहस किया था। वर्ष 1945 में विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद सिंगापुर वापस अंग्रेजों के नियंत्रण में चला गया था,पर इसकी प्रगति की असली कहानी शुरू होती है अगस्त 1965 से,जब यह एक स्वतंत्र गणतंत्र बना। उस समय यह गंभीर बेरोजगारी और आवासीय संकट से जूझ रहा था और वहीं 1990 के दशक तक यह एक अत्यंत विकसित मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और जापान के बाहर एशिया में सर्वोच्च प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के साथ दुनिया के सबसे समृद्ध देशों में से एक बन गया था।

सिंगापुर की इस प्रगति के नायक थे 1965 में प्रधानमंत्री बने ली कुआन यू। ली और उनकी सरकार ने अपनी सोच और नीतियों से सिंगापुर को दौड़ाया। एक व्यक्ति भी एक देश को कहां से कहां पहुंचा सकता है, इसके उदाहरण सिंगापुर के ली कुआन यू और दुबई के किंग राशिद हैं। प्रधानमंत्री ली ने एक आधुनिकीकरण कार्यक्रम पर काम करना शुरू कर दिया जिसमें विनिर्माण उद्योग की स्थापना, बड़े सार्वजनिक आवासीय एस्टेट के विकास और सार्वजनिक शिक्षा पर भारी निवेश करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। आजादी के बाद से सिंगापुर की अर्थव्यवस्था में प्रति वर्ष औसतन नौ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। 1980 के दशक के बाद से, सिंगापुर उत्कृष्टता, नवाचार, उच्च तकनीक उद्योग और सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करके खुद को एक उभरते हुए देश से एक समृद्ध देश में बदलने में सक्षम हुआ।

भारत,ऑस्ट्रेलिया और म्यांमार की तरह सिंगापुर भी अंग्रेजों के अधीन था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान सिंगापुर को 'जिब्राल्टर ऑफ द ईस्ट' कहा जाता था, क्योंकि सिंगापुर में ब्रिटेन सेनाओं की भारी मौजूदगी हुआ करती थी। जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 में इस पर हमला कर दिया,ब्रिटेन को शर्मनाक अंदाज में हराया। सिंगापुर को तहस-नहस किया गया। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने इस हार को ब्रिटेन इतिहास का सबसे बुरा नुकसान बताया था। सिंगापुर को हर तरफ से हमला झेलना पड़ा। 1944-45 में अमेरिकी विमानों ने जापान के कब्जे वाले सिंगापुर पर हुए हमले से यहां के व्यापारिक बंदरगाह भी बुरी तरह बर्बाद हो गए।

ऐसे सिंगापुर में सफलता की कहानी के मुख्य नायक रहे हैरी ली उर्फ ली कुआन यी का जन्म 16 सितंबर 1923 को एक चीनी अप्रवासी परिवार में हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी की। ली छात्र जीवन से ही समर्पित समाजवादी रहे। पढ़ाई के बाद वह सिंगापुर लौटे और एक प्रमुख ट्रेड यूनियन वकील बने। साल 1954 में उन्होंने पीपुल्स एक्शन पार्टी की स्थापना की और इस पार्टी के महासचिव बने। साल 1959 के चुनावों में पीएपी ने बहुमत हासिल किया। यहीं से ली ने सिंगापुर की कमान संभाली। सिंगापुर जहां उस समय बेरोजगारी चरम पर थी। अपराध थे। जातीय तनाव और हिंसा होती थी। बेहद गरीबी थी। स्वच्छता का अभाव था। ज्यादातर लोग झुग्गियों में रहते थे। खूब भ्रष्टाचार था। ब्रिटेन बंगाल में अफीम उगाते और उसकी प्रोसेसिंग सिंगापुर में होती थी। इस कारण अफीम नशेड़ियों की भरमार थी। खूब जुआ होता था। ली के लिए 1963 में मलेशिया से संधि सिंगापुर के औपनिवेशिक अतीत से दूर फेंकने की एक कोशिश थी,पर यह सफल न हुई। फिर उन्होंने हिंदुस्तान से भी बहुत ज्यादा घनी आबादी वाले,दिल्ली के भी आधे देश सिंगापुर को उसके दम पर ही आगे बढ़ाने के कदम युद्ध स्तर पर उठाने शुरू किए।

किसी भी देश की प्रगति के लिए उसकी सीमाओं पर और देश के अंदर भी शांति बहुत जरूरी है। देश में आर्थिक विकास और समृद्धि को बढ़ावा देने और क्षेत्र में शांति व स्थिरता कायम करने के लिए वर्ष 1967 में दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान) की स्थापना थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में की गई। इसके संस्थापक सदस्य थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपींस और सिंगापुर थे। इसमें ली ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। सिंगापुर विविधताओं भरा देश है। ब्रिटिश शासन के समय चीनी, मलय और भारतीय सिंगापुर आए थे। सिंगापुर में जातीय रूप से चीनी करीब 74 प्रतिशत, मलय करीब 14 प्रतिशत,भारतीय करीब 9 प्रतिशत, बाकी 3 प्रतिशत शेष दुनिया के लोग हैं। वर्ष 1964 में घोर जातीय हिंसा हुई थी।

### जातीय समुदायों का संतुलित मिश्रण

देश को आगे ले जाने के लिए सीमाओं पर शांति के साथ-साथ आंतरिक शांति, सामाजिक समरसता बहुत जरूरी है। कोई भी देश,यहां तक कि कोई भी परिवार तक आपस में लड़कर तरक्की नहीं कर सकता,यह बात ली ने भलीभांति समझी। ली ने तय किया कि देश सेकुलर होगा जिसके लिए सिर्फ कहना और लिखना ही काफी नही, इसके लिए सक्रिय उपाय किए गए। एक एथनिक इंटीग्रेशन पॉलिसी बनी। 1960 के दशक की शुरुआत में राज्य ने नवनिर्मित आवास और विकास बोर्ड (एचडीबी) के माध्यम से बड़े पैमाने पर सार्वजनिक आवास कार्यक्रम शुरू किया गया। सिंगापुर की बहु-सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और नस्लीय एकीकरण और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए इन सभी सरकारी भवनों में विभिन्न जातीय समुदायों का संतुलित मिश्रण रखा गया। इस तरह हर भवन में सभी जातीय वर्गों का प्रतिनिधित्व है। वर्ष 1990 में धार्मिक सद्भाव रख-रखाव अधिनियम (एमआरएचए - मेंटेनेंस ऑफ हारमोनी एक्ट) पारित हुआ। इस एक्ट के द्वारा धर्म को राज्य से अलग करने का एक विधायी प्रयास किया गया। एमआरएचए ने धार्मिक सद्भाव के लिए राष्ट्रपति परिषद की स्थापना की जिसके दो-तिहाई सदस्य सिंगापुर में प्रमुख धर्मों के प्रतिनिधि और सार्वजनिक सेवा या सामुदायिक संबंधों में शामिल व्यक्ति हैं। परिषद धार्मिक सद्भाव के मामलों पर अंतर-धार्मिक संवाद की सुविधा प्रदान करती है और गृह मामलों के मंत्री द्वारा दिए गए निरोधक आदेशों के आधार पर विचार करती है और सिफारिशें करती है। धार्मिक कट्टरवाद को रोकने के राज्य के प्रयासों के एक हिस्से के रूप में, 2003 की धार्मिक सद्भावना घोषणा (डीआरएच) ने सिंगापुर के मुस्लिम समुदाय के आसपास अविश्वास और जांच के माहौल को संबोधित करने की मांग की। डीआरएच ने एमआरएचए के शब्दों को दोहराते हुए घोषणा की, "हमारे बहु-जातीय और बहु-धार्मिक समाज में शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए धार्मिक सद्भाव महत्वपूर्ण है।" हर वर्ष की 21 जुलाई नस्लीय सद्भावना दिवस के रूप में मनाई जाती है जिसमें 1964 के जातीय दंगों की पृष्ठभूमि में बच्चों को विभिन्न सांस्कृतिक और जातीय वाले देश में जातीय और धार्मिक एकता के महत्व को बतलाया जाता है। साथ ही यह भी बताया जाता है कि इस एकता के लिए एक दूसरे के प्रति विश्वास पैदा करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि इस दिन वह दूसरे धर्म के ड्रेस धारण करें और एक दूसरे का खाना शेयर करें।

## खाना खजाना

# व्हाइट सॉस पास्ता

व्हाइट सॉस पास्ता एक ऐसी रेसिपी है,जो बच्चों को बहुत पसंद आती है। पास्ता बनाने के कई तरीके हैं और इसे सफेद सॉस में बनना उनमें से एक है। इतावली व्यंजनों का एक प्रमुख व्यंजन, पास्ता अलग-अलग आकार और नामों में आता है। जैसे एंजेल हेयर, मैकरॉनी, फारफाले (बो टाई) फेटुकाइन, स्पेगेटी, प्यूसिली, रोटिनी, शैल्स और जिटी उल्लिखित सभी नामों में से प्रसिद्ध हैं।

सनाज स्वाद
फूड ब्लॉगर

### सामग्री

- 1 कटोरी पास्ता
- कटी हुई शिमला मिर्च
- 2 चम्मच स्वीट कॉर्न
- 1 कटोरी चीज क्रश किया हुआ
- 1 कटोरी दूध
- 1 चम्मच मक्खन
- 3-4 कलियां लहसुन
- नमक
- मिक्स हर्ब्स

### बनाने की विधि

सबसे पहले आप एक पैन में मक्खन गरम करें और दर्दरा लहसुन, कटी हुई शिमला, स्वीटकॉर्न को थोड़ा पकाएं। दूध डालें और 2-3 मिनिट पकने दें। चीज डालें और अच्छे से मिक्स होने तक पकाएं। नमक और चीनी मिलाएं। पास्ता मिलाएं और गैस बंद कर दें। अब चिली फ्लेक्स और ऑरिगैनो मिलाएं और गरम-गरम सर्व करें।

# वैवाहिक जीवन को बचाने की करनी होगी पहल

**परिवार में समझबूझ को बढ़ाने के लिए एक ईमानदार पहल जो जोड़ों को इस महत्ता का अहसास करा सके कि परिवार में समझबूझ नहीं होगी तो किसी का भी हित नहीं हो सकेगा,न ही आपके परिवार का, न ही समाज का, न ही आर्थिक और न ही अन्य। बिना परिवार में अनुशासनहीनता पैदा किए हुए सुलझे हुए तरीके से बीच के सुंदर रास्ते निकालने की समझदारी इन शादीशुदा जोड़ों में डेवलप करना आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है।**

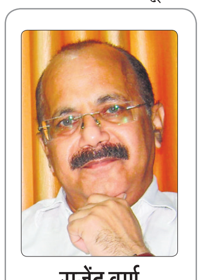

राजेंद्र वर्मा
कानपुर

भारत में शादियां टूटने की बड़ी और मुख्य वजह, हमारा इतिहास, रावण, दुर्योधन, गवाह हैं कि ताकत जब स्वछंद हो जाती है तो पतन के सिवा कुछ नहीं होता और वो भी केवल अपना नहीं अपने साथ-साथ अपने पूरे परिवार को भी ले डूबते हैं। इसका कारण यह है जिम्मेदारी की जगह आपकी अनुचित जिद,आपका अहम। आपको पता भी नहीं चलता और आपका यह नेचर व अहम आपका और आपके परिवार का भाग्य भी खा जाता है और आप केवल दूसरों को दोष देते रह जाते हैं। जब तक ये संस्कार जिंदा थे हम दुनिया में इतने रईस थे कि लोगों ने हम पर 50 बार आक्रमण किया और लूटा, अंग्रेजों ने तो 200 साल तक लूटा।

हमारे इसी स्वार्थी नेचर ने हमें दुनिया में पीछे कर दिया,ये बात लोगों की समझ में आती ही नहीं। इस देश के पीछे रहने का कारण यही 90 प्रतिशत पति-पत्नी ही हैं,जो परिवार में समझदारी बढ़ाने की जगह जीवनभर सिर्फ एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण करने में और तमाम दूसरे व्यर्थ के विचारों में उलझे रहते हैं। ये अपना अहम दिखाने के चक्कर में बच्चों का दिमागी विकास बाधित कर देते हैं और उसके भविष्य के रास्ते में स्वयं ही जाने अनजाने रोड़ा बन जाते हैं। मेरी निगाह में भारत की जो दशा है, उसके जिम्मेदार न तो राजनेता हैं और न ही अधिकारी,उसके जिम्मेदार यही लोग हैं। आखिर 90 प्रतिशत अधिकारी और राजनेता भी तो इन्हीं स्वार्थी परिवारों से निकल कर आए हैं और यही देखते-देखते बड़े हुए हैं। मेरी निगाह में सशक्तता का अर्थ पुरुष के लिए शायद कुछ ऐसा है कि वह बलिष्ठ हो या अगर बलिष्ठ न भी हो तो ठीक-ठाक शरीर वाला हो जिसके साथ वो सुरक्षित महसूस कर सकें। समझदार हो जिससे वो समझदारी भरे निर्णय ले सके और उचित समय पर सही गाइड भी कर सके। विवेकशील हो जो विवेकपूर्ण निर्णय ले सके न कि सनकपूर्ण निर्णय ले। समाज में उसकी एक अपनी पहचान हो और जरूरत के समय वो अपने सामाजिक संबंधों के दम पर खराब परिस्थिति में भी परेशानियों से खुद भी बाहर निकल सके और अपने परिवार को भी बाहर निकाल सके। उसकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी हो ताकि परिवार ठीक से चला सके और अपने घर और बच्चों के लिए अच्छे इंतजाम कर सके और उनका लालन-पालन अच्छी तरह से कर सके। जरूरत पड़ने पर उसमें अकेले भी सच के साथ खड़ा होने की क्षमता हो,कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो सके और साथ निभा सके। चुनौतीपूर्ण समय में अपने परिवार के सामने आई हुई चुनौती को समझदारी से और सही निर्णय लेकर निपट सके और अपनी पत्नी के साथ डटकर खड़ा रह सके। विपरीत समय आने पर भी अपने परिवार को संभालने में एक चट्टान की तरह सामने खड़ा रहे।

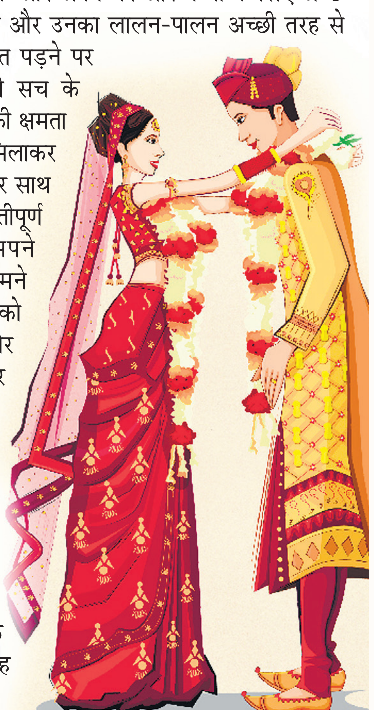

### सशक्त पुरुष और महिला

सशक्त पुरुष सभी महिलाओं को चाहिए यह बात पूरी तरह सही है। फिर सशक्त महिला में यह सब जिम्मेदारी वाले गुणों की उम्मीद क्यों नहीं की नहीं जानी चाहिए? आखिर महिलाओं के मामले में क्यों निरंकुशता को ही सशक्तता का जामा पहनाया जा रहा है? सशक्त महिला के बारे हमारे मन में इन गुणों की जगह उल्टी-पुल्टी छवि क्यों हमारी कल्पना में उभर कर आती है, क्योंकि हमारी फिल्मों में भी सशक्त महिला की इसी तरह के विद्रोही और मॉर्डन तेवरों वाली, अपनी सनक भरी मनमर्जी से चलने वाली और सनक भरे निर्णय लेने वाली, स्वछंद विचारों वाली और कभी-कभी अनियंत्रित विचारों वाली भी,बराबरी करते हुए बराबर लड़ने को तैयार रहने वाली महिला जिसके खाते में 10-20 लाख रूपए भी हों फिर तो सशक्त होना बुलंदियों को छूता दिखाई देता है, ऐसी इमेज दिखाई जाती है। क्या इन सब गुणों वाली किसी महिला को आप सशक्त महिला कहेंगे और क्या आप अपने घर में ऐसी सशक्त बहू लाना चाहेंगे?

कुल मिलाकर यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार में समझबूझ को बढ़ाने के लिए अखबारों या अन्य माध्यमों से कुछ बड़ी पहल करनी होगी,जो इस महत्ता का अहसास करा सकें कि परिवार में समझबूझ नहीं होगी तो किसी का भी हित नहीं हो सकेगा। बिना परिवार में अनुशासनहीनता पैदा किए हुए सुलझे हुए तरीके से बीच के सुंदर रास्ते निकालने की समझदारी इन जोड़ों में डेवलप करनी होगी ताकि हमारे नवयुगल,हमारा समाज परिपक्व बन सके और ज्यादा तरक्की कर सके। एक मानसिक स्वस्थ और समझदारी भरा परिवार बनाने की जरूरत और अनिवार्यता के पक्ष में कुछ हमें प्रासंगिक और साफ सुथरे मन से बात बोलने और बताने की जरूरत और जिम्मेदारी समझनी होगी ताकि स्वस्थ मानसिकता वाले बच्चे बड़े होकर अच्छा और सुलझा हुआ समाज बनाएं। एक कहावत है कि किसी घर में फूट डालनी हो तो पति-पत्नी के बीच उनके हक की याद दिला दो,अहसास करा दो बस आज नहीं तो कल परिवार बिखर गया समझो। हमारे माता-पिता दादा-दादी और शायद आप सभी के परिवारों में भी 50 साल बिना अलगाव के कट गए,क्योंकि उन्हें अपने हक से ज्यादा अपनी जिम्मेदारी का भान था। आज जिम्मेदारी की जगह छुद्र व्यक्तिगत स्वार्थ और अहम ने ले ली है। इनके कान भरना आज भी दुनिया के आसानतम कामों में से एक है। मैं इस बात पर अनुभवी लेखक जावेद अख्तर साहब की बात का समर्थन करता हूं,जो उन्होंने लाइव हिंदुस्तान न्यूज पेपर में एक इंटरव्यू के दौरान कही थी कि 'सशक्त महिला का मतलब क्या है यह फिल्ममेकर्स और समाज दोनों को ही नहीं पता'। वो फिल्म 'जब तक है जान' के अनुष्का शर्मा के एक डायलॉग का उदाहरण भी देते हैं। फिल्म में अनुष्का शर्मा कहती हैं कि 'शादी के पहले मैं पूरी दुनिया में अलग-अलग देश के मर्दों के साथ सोऊंगी'। मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह किस तरह का महिला सशक्तिकरण परोसा और दिखाया जा रहा है हमें। किसी प्रयोग के नाम पर आपको समाज को बिगाड़ने वाले मैसेज देने की छूट नहीं दी जा सकती,मेरी निगाह में यह एक तरह का राष्ट्रीय पाप और अपराध है। सशक्त पुरुष और सशक्त महिला की पहली जिम्मेदारी है कि पूरी सशक्तता से अपनी जिम्मेदारी निभाना परिवार के प्रति, समाज के प्रति, जबकि आजकल पूरी सशक्तता अपनी जिम्मेदारी की जगह अपना अहम दिखाने में दिखाई जाती है। बेशक अपने बच्चों को सशक्त बनाएं,लेकिन यह भी ध्यान रहे कि उनके मन में जिम्मेदारी का का स्थान पहला होना चाहिए। इसलिए नव विवाहितों में विवाह का विवेक विकसित करने पर जोर देना होगा, अन्यथा विवाह केवल पश्चिम की तरह शारीरिक संबंधों का एक निमित्त मात्र बनकर रह जाएगा। जबकि विवाह का असली मंतव्य हमारे समाज में यशस्वी और संस्कारी पुत्र परिवार को देना, समाज को देना और उनके लालन-पालन को हर तरह से अच्छा माहौल देना था। विवाह में एक दूसरे के प्रति मन से जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार रहें अन्यथा विवाह ही न करें और जीवनसाथी जैसे जिम्मेदारी भरे शब्द को बदनाम न करें। वर्ना कहीं एक दूसरे की देखा-देखी भारतीय समाज भी केवल शारीरिक रिश्तों और पैसों का भूखा समाज बनकर न रह जाए।

## साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

**मेष:** इस सप्ताह आप जिस दिशा में भी प्रयास करेंगे ,उसमें सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। लंबे समय से अटके हुए काम तेजी से पूरे होते हुए नजर आएंगे और आपको सभी का सहयोग और समर्थन मिलेगा। रोजी-रोजगार की कामना पूरी होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों की अधिकारी प्रशंसा करेंगे।

**वृष:** इस सप्ताह अपने सपनों को सच साबित करने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ेगी। मनचाही सफलता पाने के लिए आलस्य और अभिमान का त्याग करके कठिन परिश्रम करना होगा। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों को कारोबार में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा।

**मिथुन:** यह सप्ताह कामकाज में शुभ फल प्रदान करने वाला है। किसी शुभ समाचार से होगी जिसके कारण घर में खुशियों का माहौल बना रहेगा। सप्ताह के शुरुआत में किसी प्रिय व्यक्ति का घर में आगमन हो सकता है। इस दौरान अचानक से पिकनिक-पार्टी के अवसर मिलेंगे। आपका भाग्य पूरी तरह से प्रबल नजर आएगा।

**कर्क:** इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में अधिकारीगण आपके ऊपर पूरी तरह से मेहरबान रहेंगे। हालांकि इस दौरान आपको अपने गुप्त शत्रुओं से पूरी तरह से सावधान रहना चाहिए,क्योंकि वे आपके कामकाज में बाधाएं डालने या फिर आपकी छवि को खराब करने का षडयंत्र रच सकते हैं। व्यवसाय से जुड़े लोगों को कारोबार में मंदी का सामना करना पड़ सकता है।

**सिंह:** इस सप्ताह आपका भाग्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काम करता हुआ दिखाई देगा। करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद और मनचाहा फल प्रदान करने वाली होगी। यात्रा के दौरान आपके संपर्क प्रभावी लोगों के साथ बनेंगे जिनकी मदद से आप भविष्य में बड़े लाभ की प्राप्ति कर सकेंगे।

**कन्या:** इस सप्ताह अपने नजदीकी लोगों के साथ किसी बात को लेकर मनमुटाव हो सकता है। आपको लोगों के साथ विनम्रता से बात-व्यवहार करना चाहिए अन्यथा वर्षों से बने-बनाए संबंध में न सिर्फ दरार आ सकती है,बल्कि वे टूट भी सकते हैं। यदि आप भूमि-भवन को लेकर कोई सौदा करने की सोच रहे हैं तो अंतिम निर्णय लेने से पहले किसी शुभचिंतक की राय जरूर लें।

**तुला:** इस सप्ताह किसी बड़ी मनोकामना के पूरी होने पर आपका मन प्रसन्न रहेगा। इस दौरान आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे जिसके चलते आपके भीतर गजब की ऊर्जा और आत्मविश्वास देखने को मिलेगा। सप्ताह के प्रारंभ में अचल संपत्ति की प्राप्ति संभव है।

**वृश्चिक:** इस सप्ताह लोगों के साथ बात-व्यवहार करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। उन्हें यह बात अच्छीं तरह से समझना होगा कि वो दूसरों को कहते क्या हैं और लोगों तक उनकी बात पहुंचती क्या है। आपके मुंह से कुछ ऐसे शब्द निकल सकते हैं जिसका लोग गलत मतलब निकाल सकते हैं।

**धनु:** इस सप्ताह मनचाही सफलता और सुख-साधन की प्राप्ति के लिए धन व समय दोनों का प्रबंधन करके चलना होगा। इस दौरान आपको लंबी या छोटी दूरी की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। यात्रा थकान भरी,लेकिन नए संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। परीक्षा प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों के लिए यह समय चुनौती भरा रह सकता है।

**मकर:** इस सप्ताह स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा। प्रियजनों के साथ हंसी-खुशी समय बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। इस दौरान घर में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों के लिए यह सप्ताह पूरी तरह से शुभता लिए हुए है।

**कुंभ:** इस सप्ताह आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपके सिर पर अचानक से कुछ एक बड़ी जिम्मेदारियां आ सकती हैं, जिन्हें निभाने के लिए आपको अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। सुखद पहलू यह है कि आपके प्रयास सफल होंगे और आप बड़ी से बड़ी चुनौती को पार कते हुए उससे बाहर निकल जाएंगे।

**मीन:** यह सप्ताह शुभ रहने वाला है। व्यवसाय से जुड़े लोग नया कारोबार शुरू करने अथवा पुराने कारोबार का विस्तार करने की दिशा में कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं। इस संबंध में की जाने वाली यात्रा शुभ और मनचाहा फल देने वाली साबित होगी। संतान की ओर से कोई सुखद समाचार की प्राप्ति हो सकती है।

## वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

### काकुरो 72

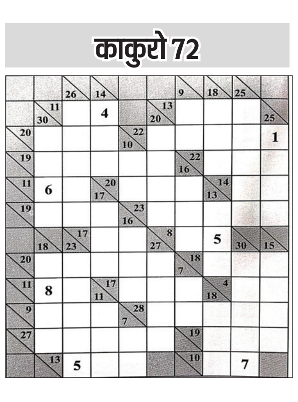

### काकुरो 71 का हल

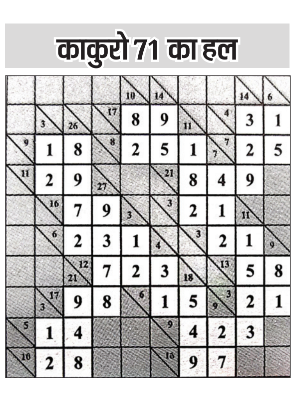

# खुद ही डॉक्टर है हमारा शरीर

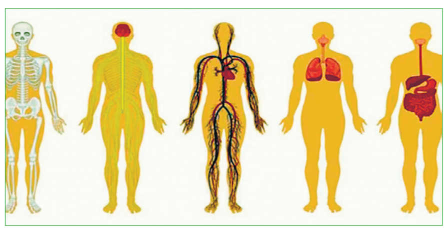

डॉ सलिल समाधिया
जबलपुर

देह अपनी चिकित्सा खुद ही करती है। कोल्ड फ्लू होते ही कफ बनता है,गला सूज जाता है और शरीर में ज्वर हो जाता है। यह शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षा प्रणाली है। शरीर का कोई हिस्सा कहीं जोर से टकरा जाए तो तुरंत ही वहां सूजन आ जाती है। चोटिल टिशूज की मरम्मत के लिए हजारों कोशिकाएं तुरंत तत्क्षण वहां भेज दी जाती हैं। किसी अन्य मदद आने के बहुत पहले। कोई घाव हो तो देखिए वह धीरे-धीरे सूखता है। एक दो दिन उसमें पपड़ी बनती है। फिर कोई बीस-पच्चीस दिन में वह पपड़ी स्वतः ही झड़ जाती है और ताजा त्वचा प्रकट हो जाती है। एक बहुत ही कौशल से भरा, सजग और ध्यानस्थ चिकित्सक हमारे भीतर मौजूद है।

उसकी भाषा संकेत है। अगर जरा सी उठ-बैठ में थकान लगे तो यह संकेत है कि शरीर को विश्राम चाहिए। ज्यादा खाया न जाए,तो यह संकेत है कि शरीर को अल्प-आहार चाहिए। ठंड लगे,तो कुछ गर्म ओढ़कर शरीर को ऊष्मा दी जाए। भीतरी डॉक्टर बोलकर नहीं,बल्कि संकेत की भाषा में सजेशन देता है। कब क्या खाना है,कितना व्यायाम, कितनी ऑक्सीजन,कितनी धूप चाहिए,वह इशारा कर देता है। चाहे हृदय की चिकित्सा हो कि मस्तिष्क चिकित्सा, आहार नली का संक्रमण हो कि टूटी अस्थि का जुड़ना, दुनिया का सबसे काबिल डॉक्टर हमारा शरीर खुद ही है। किसी वायरस या बैक्टीरिया का आक्रमण होता है अथवा किसी खाद्य दोष से संक्रमण होता है तो शरीर, तत्क्षण उससे जूझने में प्रवृत्त हो जाता है। हमें तो खबर तब लगती है जब इस भीतरी युद्ध के परिणाम ज्वर,श्लेषमा (कफ, बलगम), ठंड, कमजोरी के रूप में बाहरी शरीर पर उजागर होते हैं। अगर देह की सांकेतिक भाषा को सुनने का अभ्यास हो तो बहुत आरंभ में ही रोग का नाश किया जा सकता है। चाहे कितना ही जटिल रोग क्यों न हो,उपचार की सर्वोत्तम व्यवस्था शरीर में ही मौजूद है। उसे हमसे कुछ सहयोग की दरकार है। ऑक्सीजन भरपूर, ठीक-ठाक पानी,पथ्य-कुपथ्य, चित्त की प्रफुल्लता आदि और हम बड़े से बड़े रोग को मात दे सकते हैं कैंसर को भी। शरीर हमसे कुछ न्यूनतम अपेक्षाएं भी रखता है। पहला देह में अपशिष्ट और टॉक्सिंस इकट्ठे न हों और अगर हो जाएं तो उनका पूरी तरह उत्सर्जन भी हो। दूसरा मन में भी अपशिष्ट और टॉक्सिंस न रखें। (ग्रजेस, कुंठा, बदला, शोक आदि) क्योंकि ज्यादातर रोग, मनोदैहिक होते हैं। पहले विचार बीमार होता है फिर शरीर बीमार होता है। विचार बीमार है तो जीने के ढंग में नुक्स होगा,आप जल्दबाज होंगे तो जल्दी खाएंगे,जल्दी चबाएंगे। इस तरह रोज-रोज,अनचबा पेट में ढकेलेंगे तो देर-सबेर पेट,आंत और लीवर की बीमारी का आना लाजमी है। बीमार जीना,बीमारी लाता है। सजग जीना, स्वास्थ्य लाता है। सजगता का अर्थ सिर्फ खाना-पीना और सोने उठने में सजगता नहीं है,बल्कि,धनाकांक्षा, दिखावा, कामुकता,संसाधन जुटाने की हवस ऐसे हर मनोभाव और प्रवृति के प्रति सजगता है। मन में गांठ है तो कैंसर की गांठ बहुत दूर नहीं। विचारों में जकड़न है तो जोड़ों में जकड़न अवश्यंभावी है। देह और मन की सफाई हर रोग का खात्मा है। बाहरी चिकित्सा कितनी ही एडवांस क्यों न हो,वह देह-मन की बुनावट और उसके रेशों का रहस्य,उतना नहीं जानती जितना देह स्वयं जानती है। बाहरी चिकित्सक कितना ही अनुभवी और योग्य क्यों न हो,शरीर में मौजूद 'परम चिकित्सक' के सम्मुख अभी विद्यार्थी ही है।

# खामोश हो गई मखमली आवाज

अंजलि ओझा
शिक्षिका

सन् उन्नीस सौ इक्यानवे में आई फिल्म साजन जिसे मैंने कब देखा ठीक से याद नहीं। ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन पर देखी गई यह फिल्म इसके बेहतरीन संगीत के कारण प्रिय रही। इसी फिल्म के गीत जिएं तो जिएं कैसे..../ ने गजल गायकी के उस्ताद पंकज उधास से पहला परिचय कराया। पंकज उधास की उस दृश्य में उपस्थिति उन्हें ही कहानी का नायक बना रही थी। संजय दत्त का पर्दे की आड़ में बैठे होने के अलावा और कोई भी चित्र मस्तिष्क में पुनः नहीं उभरता। कुछ उभरकर आता है तो वह है सहजता और सुर के शिखर पर बैठे पंकज उधास का वो साधारण सा चेहरा जिसमें जमकर आकर्षण था।

गर्दन तक आते घने बालों से और छोटी-छोटी आंखें। गाते हुए भी माथे पर कोई बल नहीं। छोटी उम्र में समझ इतनी सी थी कि जो गाता है वही लिखता भी है,सो लगा ये इन्होंने ही लिखा होगा। दिल में रच-बस गई वह आवाज और शक्ल। फिर जब भी उदास हुए कई-कई बार सुना। कैसे कहूं बिना तेरे जिन्दगी ये क्या होगी...! अभी भी जैसे कल की बात लगती है।

फिर सुना एक तरफ उसका घर/ एक तरफ मयकदा/ हालांकि मयकदे से कोई लेना-देना नहीं था,लेकिन उस मखमली आवाज का नशा तो कमाल कर देता था। एक समय पर 'चिट्ठी आई है वतन से चिट्ठी आई है' को याद करने के लिए सैकड़ों बार सुना,रिपीट मोड पर। जब पिता कहता 'मैं तो बाप हूं मेरा क्या है/ तेरी मां का हाल बुरा है/तेरी बीवी करती है सेवा/सूरत से लगती है बेवा' तो आंखें बरबस ही गीली हो जाती और जान पड़ता कि किसी योद्धा का पिता सच ही अपने बेटे से वापस लौट आने की गुहार लगा रहा है।

इस गाने का सम्मोहन में पड़कर इसे याद किया स्कूल में गाया, कॉलेज में गाया,अकेले अक्सर गुनगुनाया।

पंकज जी की प्रजेंस साधारण छवि लिए होती थी। ऐसा कभी नहीं हुआ कि गाने का भार उनके माथे पर झलका हो। उन्होंने अपनी पहुंच,अपनी सामर्थ्य, अपनी मेहनत,अपने अर्जन के दायरे में रहकर गायकी की और सफल रहे। उनकी आवाज सदाबहार है,कभी भी पुरानी न होने वाली और न ही उबाऊ लगने वाली। मीठे पानी के चश्मे की तरह आकंठ तृप्त करने वाली सुर वीणा का यकायक शांत हो जाना संगीत प्रेमियों के हृदय को चोटिल करने वाली दुर्घटना है।

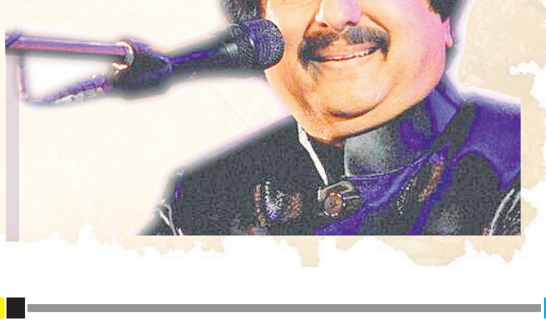

# सुल्तान की सबसे बड़ी चुनौती थी मंगोलों से निपटना

सुल्तान अलाउद्दीन की इच्छा थी कि वह विश्व विजय करे और एक दूसरा धर्म चलाए। उसके मित्र और विश्वसनीय सहयोगी दिल्ली के कोतवाल अलाउल मुल्क ने उसे समझाया कि धर्म चलाना सुल्तानों का काम नहीं,अपितु जिसे अल्लाह चाहे अपना पैगंबर बनाकर दुनिया में भेजता है और धर्म के मामले उनके अख्तियार में होते हैं। विश्व विजय का स्वप्न सिकंदर इस लिए देख पाया कि उसके दरबार में अरस्तू जैसे योग्य वजीर थे,जो उसकी अनुपस्थिति में राज्य की बागडोर संभाले रहे, इसके बाद भी सिकंदर का स्वप्न पूरा नहीं हुआ।

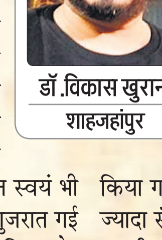

डॉ.विकास खुराना
शाहजहांपुर

अलाउद्दीन खिलजी जो अपने समय का अद्भुत सुल्तान था,ने अलाउल मुल्क की सलाह को मान लिया और दोनों स्वप्न छोड़ दिए,किंतु उसने द्वितीय सिकंदर की उपाधि ली तथा सिक्के ढाले। सुल्तान की सबसे बड़ी चुनौती मंगोल आक्रमणों से निपटने की थी। मंगोल मंगोलिया के रहने वाले थे,वे मुसलमान नहीं थे,बल्कि उनका मूल धर्म बौद्ध और स्थानीय परंपरा का मिश्रण था,बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उनका महान नेता चंगेज खान धरती पर ईश्वर के अभिशाप के नाम से जाना जाता था। चंगेज खान इल्तुतमिश के समय जलालुद्दीन मगबर्नी का पीछा करते हुए भारतीय सीमाओं पर उपस्थित हुआ था,किंतु सुल्तान ने मगबर्नी के दूत इयान उल मुल्क का दरबार में कत्ल करवा दिया जिसके कारण चंगेज खान भारत में प्रविष्ट नहीं हुआ। अलाउद्दीन के समय सन् 1296 से लगातार 1308 तक मंगोलों के धावे होते रहे। कादिर खान,कुतलुग ख्वाजा, सलदी उनके प्रख्यात नेता थे। इन सभी हमलों का माकूल जवाब दिया गया,आप इसे यह भी कह सकते हैं जब पूरा मध्य एशिया मंगोलों के बर्बर हमलों से त्रस्त था,युवाओं के सामूहिक कत्ल हो रहे थे,महिलाएं बांटी जा रही थीं तब भारतीय प्रजा की रक्षा करने के लिए दिल्ली में एक प्रबल सुल्तान उपस्थित था। उसके मंत्री और सेना नायक जफर खान, नुसरत खान, उलूग खान मंगोलों पर इतना गालिब (प्रभावी) थे कि मंगोलिया में कहावत बन गई जब घोड़े पानी नहीं पीते तो कहा जाता है कि क्या तुमने जफर खान को देख लिया,जो तुम पानी पीने से इंकार कर रहे हो। सुल्तान स्वयं भी निर्भीक था,एक बार जब दिल्ली की सेनाएं गुजरात गई हुई थीं तब मंगोलों ने रात में ही किलोगढ़ी का किला घेर लिया। मंगोल घोड़े चलने में इतने तेज थे कि एक रात में ही सीमा पार कर दिल्ली आ धमके। अलाउद्दीन अभी सो ही रहा था कि उसे यह सूचना दी गई।

दिल्ली के कोतवाल अलाउल मुल्क ने उसे शांत रहने और गुजरात से सेनाएं वापस आने तक किले के अंदर रुकने के लिए कहा गया,किंतु सुल्तान ने यह कहते हुए मनाकर दिया कि अगर मैं डर कर किले के अंदर रहा तो आने वाली पीढ़ियां तारीखी किताबों में मुझे कायर मानेगी,उसने मुट्ठी भर सिपाहियों के साथ किले के दरवाजे खोल मंगोलों पर हमला कर दिया। मंगोल यकीन ही नहीं कर पाए कि इतनी जल्दी हमला हो जाएगा,इस युद्ध में भी मंगोलों को बुरी तरह से परास्त किया गया। सुल्तान ने इन आतताइयों से निपटने के लिए दीर्घकालिक योजनाएं बनाई। उत्तर पश्चिम से दिल्ली तक किलों की लंबी श्रेणी बनाई गई। बाह्य चौकियां गाजी तुगलक के अधिकार में रख छोड़ी गईं। बाजार पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया गया ताकि बढ़ी हुई सेनाएं जिसमें चार लाख से ज्यादा सैनिक केवल दिल्ली में ही थे,कम तनख्वाह में अपनी जरूरत का काम चला लें।

पहले आदेश के द्वारा सभी अनाजों के दाम निश्चित कर दिए गए,अगर इनमें कहीं आधे टंके से ज्यादा अंतर होता तो संबंधित व्यापारी न्याय के दायरे में लाए जाते थे। सुल्तान खुद तीन स्रोतों से बरीद, मुन्ही और बाजार के दफ्तर से रोजाना की मूल्य सूची का क्रास चेक करवाता था। बरीद सरकारी गुप्तचर तथा मुनही उसके अपने निजी गुप्तचर थे। थोड़े दिनों में यह खबर फैल गई कि सुल्तान का अख्तियार जिन्नों पर है,जो बाजार की खबरें उसे देते है। सुल्तान के शासनकाल के अंत तक इन मूल्यों में कभी कोई फर्क नहीं आया। मुल्तानी व्यापारियों को सत्तर लाख टका अग्रिम रूप से देकर उन्हें विदेशी माल लाने के लिए कहा गया। उन्हें एक दूसरे की ईमानदारी की जमानत लेनी होती थी। उनके परिवार दिल्ली में ही रखे गए थे। एक अधिकारी परवाना नवीस जब यह प्रमाणित कर देता था कि अमीर की आय यह महंगा समाना खरीदने के लिए पर्याप्त है तभी वह इनसे माल ले पाता था। समाज पर कठोर नियंत्रण अध्यारोपित किया गया। कोई अमीर सुल्तान की अनुमति के बिना वैवाहिक संबंध आपस में स्थापित नहीं कर सकता था, दावतों का पूरा निषेध और मंदिरा पान बिल्कुल बंद था। आम प्रजा से सत्तर प्रतिशत तक कर की शासन की मांग थी। अनेक लोगों की शिकायत थी कि शासन कठोर है,किंतु सुल्तान अपने समय का विद्वान और चीजों को समझने वाला व्यक्ति था। वह जानता था मंगोल हमले बर्बर हैं और देश की रक्षा के लिए इतना बलिदान देना पड़ेगा। जब पूरा मध्य एशिया मंगोलों के घोड़ों तले रौंदा जा रहा था,उसके नेतृत्व में भारत सुरक्षित हो चला था।

## इतिहास के झरोखे से

# पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

### पुराणों में अहिच्छत्र का वर्णन

मूल रूप से जाग जाति का निवास होने के कारण भी यह नगर अहिच्छत्र अथवा अहिछेत्र कहलाया :– जैन अनुश्रुति के आधार पर इस नगर के नाम का संबंध अहि अर्थात् नाग अथवा सर्प से जुड़ा हुआ है,लेकिन भगवान पार्श्वनाथ के केवल ज्ञान से बहुत पहले भी इस नगर का अहिच्छत्र नाम का वर्णन महाभारत में आया है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार इस क्षेत्र में मूल रूप से नाग जाति का निवास था। ई.वी. जोशी द्वारा लिखित गजेटियर के अनुसार कुछ विद्वानों ने इस क्षेत्र में आर्यों के आगमन से पूर्व यह क्षेत्र नाग संस्कृति का केन्द्र था ऐसा बताया है। इतिहास में वर्णित पांच कबीलों में से कृवि एवं सृंजय नाग जाति से ही संबंधित थे। के. एम. श्री माली ने लिखा है कि गंगा घाटी का उत्तरी मैदान नागों का प्रमुख केन्द्र था। के. एम. जे मारसिंगे के अनुसार प्रारंभिक बौद्ध निकायों से भी ज्ञात होता है कि बुद्ध काल में नाग कबीले से संबंधित लोग भारत में गंगा क्षेत्र में निवास करते थे। प्रसिद्ध विद्वान बी.सी.ला. के अनुसार इस क्षेत्र की प्रसिद्धि के केन्द्र अहिच्छत्र के नामकरण के पीछे नाग संस्कृति के प्रभाव को भी एक महत्वपूर्ण कारण के रूप में देखा गया है। संभवत: नाग अथवा अहि का आधिपत्य होने के कारण यहां का नाम अहिक्षेत्र अथवा अहिच्छत्र कहलाया हो जैसा कि महाभारत में यह दोनों नाम उल्लिखित हैं।

### प्राचीन ग्रंथों में अहिच्छत्र के उल्लेख

पुरातन काल के विभिन्न ग्रंथों में अहिच्छत्र के उल्लेख प्राप्त हैं। वैदिक साहित्य में अहिच्छत्र का प्राचीन नाम 'परिचक्रा' मिलता है। शायद उस समय नगर का स्वरूप चक्राकार या गोलाकार रहा हो। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत काल से 'परिचक्रा' के स्थान पर इस नगर का नाम अहिच्छत्रा हो गया। महाभारत में इस नगर का नाम छत्रवती तथा अहिक्षेत्र भी मिलता है। महाभारत में ही आदि पर्व में यहां का नाम अहिच्छत्र विषय लिखा है। इसका श्लोक निम्न प्रकार है :–
अहिच्छत्रं च विषय द्रोण: समभिष्धत।
एवं राजन्नहिच्छत्रा पुरी जनपद यता।। आदि पर्व 138/76
हरिवंश पुराण तथा पाणिनी की अष्टाध्यायी में 'अहिच्छत्र' एवं अहिक्षेत्र आदि रूप पाए जाते हैं। प्रसिद्ध विदेशी विद्वान टालमी (150 ई.) ने अपनी कृति क्लोडीयस के भूगोल में इसका यूनानी नाम आदिसद्र दिया है। अहिच्छत्र को पंचाल संबंधी साहित्य में 'अहिच्छत्र जनपद' जथा अहिच्छत्र विषय नाम से भी निर्दिष्ट किया जाता रहा है।

### खुदाइयों से प्राप्त अहिच्छत्र के वर्णन

जैन तीर्थ के सामने पड़े खंडहरों की खुदाई से प्राप्त कई अभिलेखों में अहिच्छत्रा का नाम आया है। यह इलाहाबाद जिले के भोसा नामक स्थान की गुफा में अधिछत्रा रूप में खुदा है। लेख ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी शुंग कालीन है। इसकी भाषा निम्न प्रकार है :–
'अधियछात्रा राजा शौनकायन पुत्रस्य वंगपालस्य'
इसी प्रकार अहिच्छत्र की खुदाई में गुप्त काल की मिट्टी की एक मोहर निकली है जिसमें निम्न प्रकार लिखा है :–
'श्री अहिच्छत्रा भुक्तौ कुमारामात्याधिकरणस्य'
उस समय भुक्ति राज्य को प्रयोग किया जाता था। अहिच्छत्र से ही खुदाई से एक प्रतिमा प्राप्त हुई है,जो यक्ष की है। इस पर दूसरी शताब्दी का लेख है जिसमें अहिच्छत्रा नाम ही मिलता है। इस प्रकार साहित्यिक साक्ष्यों एवं पुरातात्विक आधारों में इस नगर के अहिच्छत्र एवं अहिच्छत्रा दोनों ही नाम मिलते हैं। सर्प द्वारा फणों से किसी के सर की रक्षा किए जाने की मान्यता जैन, बौद्ध एवं ब्राह्मण सभी धर्मों की अनुश्रुतियों में है। इस आधार पर अहिच्छन्त्र नाम बहुत से विद्वानों ने स्वीकार किया है। प्रसिद्ध उत्खननकर्ता कनिंधम भी 'अहिच्छत्र' नाम ही ठीक मानते हैं,लेकिन ऐतिहासिक काल में 'अहिच्छत्रा' नाम अधिक प्रचलित हो गया। अहिछत्र आदि कोट के नाम से भी प्रसिद्ध है।

### ह्वेनसांग द्वारा अहिच्छत्र का वर्णन

अहिच्छत्र नगर प्रारंभ से लेकर सातवीं शताब्दी तक समृद्धिशाली पंचाल राज्य का राजधानी नगर रहा। सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में वर्धन वंश के राजा हर्षवर्धन ने (606–64 कन्नौज साम्राज्य को चक्रवर्ती उन्नति प्रदान की। उसने अपना राज्य विस्तार अहिच्छत्र तक किया। अब अहिच्छत्र पंचाल राज्य की राजधानी नहीं था। पंचाल नाम से राज्य समाप्त हो गया। अब अहिच्छत्र कन्नौज साम्राज्य का अंग बन गया। यहां कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं। बांस खेड़ा शिलालेख से प्रमाणित होता है कि यह क्षेत्र भुक्ति एक प्रदेश का स्तर रखता था। उस समय इस भुक्ति के अनेक विषय (जिले) थे। प्रत्येक जिले में अनेक पथक (परगने) थे। हर्षवर्धन के काल में सन् 635 में चीनी यात्री भारत भ्रमण को आया। यह यात्री ह्वेनसांग अहिच्छत्र भी आया। उसके विवरण के अनुसार यह नगर 17–18 ली (अर्थात् 5.60 कि.मी.) में फैला हुआ था। जिस प्रदेश की राजधानी यह नगर था उसका विस्तार चीनी यात्री ने 3000 ली अर्थात् 960 कि.मी. लिखा है। उसने इस नगर का नाम ओ–ही–ची–तालो वर्णित किया है। उसने यहां के निवासियों के संबंध में लिखा है कि वे सत्यनिष्ठ थे और उन्हें धर्म और विद्याभ्यास से बड़ा प्रेम था। उस समय अहिच्छत्रा में चीन यात्री के लेखानुसार बौद्धों के 10 संघाराम थे जिनमें सम्मितीय संस्था के हीनयान संप्रदायी 1000 भिक्षु निवास करते थे।

# भरतपुर का राज्य विस्तार

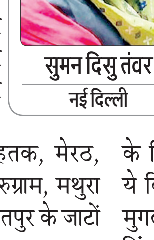

सुमन दिसु तंवर
नई दिल्ली

भरतपुर नाम भगवान राम के भाई भरत के नाम पर रखा गया है, क्योंकि यहां के शासकों के कुल देवता भगवान राम के भाई लक्ष्मण जी हैं और राजस्थान का एक अकेला लक्ष्मण मंदिर भी भरतपुर में ही है।

महाराजा सूरजमल के समय भरतपुर राज्य का विस्तार चरम पर था। भरतपुर में धौलपुर, आगरा, हाथरस, अलीगढ़, रोहतक, मेरठ, एटा, मेवात, रेवाड़ी, गुरुग्राम, मथुरा के जिले शामिल थे। भरतपुर के जाटों का उदय विद्रोह के साथ हुआ था। जाट किसानों का समाज मुगलों का शुरू से ही विरोध करता रहा था और औरंगजेब के समय तक जाट समुदाय जाट शासकों के तहत शक्तिशाली हो गया था।

महाराजा सूरजमल की मृत्यु दिल्ली अभियान के दौरान मुगल सेना ने घात लगाकर कर दी थी। उसके बाद उनके बेटे जवाहर सिंह ने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए दिल्ली के लाल किले पर चढ़ाई की। उनकी जीत में बाधा बन रहा था दिल्ली के किले का अष्टधातु का किवाड़ जिसके ऊपर लंबे-लंबे नोकधर भाले लगे थे जिसे हाथी ही तोड़ सकता था,लेकिन जब हाथी आए तो वो घबरा गए। फिर वीर सपूत पुष्कर सिंह पाखरिया अपनी छाती किवाड़ों के भालों के साथ लगाकर खड़ा हो गया और अपना बलिदान दिया। दिल्ली के किले को जीत लिया गया और ये किवाड़ थे चित्तौड़ के दुर्ग,जिन्हें मुगल दिल्ली ले आए थे। जवाहर सिंह उन अष्ठ धातु के दरवाजों को विजय स्वरूप भरतपुर लेकर आए। लोहागढ़ का किला जिसके नाम पर भरतपुर को लोहागढ़ कहा जाता है। इसे महाराजा सूरजमल ने ही बनवाया था। यह दुर्ग अजेय और अभेद्य रहा। मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक कोई इसे नहीं जीत पाया। अभी भरतपुर अपने केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के लिए प्रसिद्ध है जिसे देखने दुनियाभर के पक्षी प्रेमी आते हैं।

# अजेय योद्धा बाजीराव बल्लाल

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, दतिया

खरगौन जिले का रावेरखेड़ी गांव नर्मदा का किनारा और किनारे पर स्थित समाधि उस पराक्रमी,अपराजेय योद्धा की है जिसके साथ इतिहासकारों,समाज और देश ने न्याय नहीं किया। इस वीर योद्धा की न तो चौराहों पर मूर्तियां लगाई गईं, न किसी का जातीय स्वाभिमान जागा, न उसको जन्मदिन और पुण्य तिथि पर याद किया गया और न ही देश भक्तों, शहीदों, महापुरुषों में उसका नाम लिया गया। पेशवा बाजीराव प्रथम ने अपने शौर्य और पराक्रम से शिवाजी के हिंदू पादशाही के सपने को आधार दिया। मुगल, पुर्तगालियों की हिंदू प्रजा को सताने, उनके देवस्थान तोड़ने, धर्मांतरण कराने तथा शोषण करने की प्रवृत्ति से रक्षा की। पेशवा बालाजी विश्वनाथ की अचानक मृत्यु होने पर उनके पुत्र बाजीराव को छत्रपति साहू महाराज ने केवल 20 वर्ष की उम्र में पेशवा बनाया।

बाजीराव बचपन से ही घुड़सवारी, तीरंदाजी तलवारबाजी, भाला, बनेठी और लाठी चलाने में पारंगत था। उसने अद्भुत रणकौशल, अदम्य साहस और अपूर्व नेतृत्व क्षमता के कारण मराठा साम्राज्य को देश में सर्व शक्तिमान बना दिया। शकर खेड़ा में मुवारेज खान, पालखेड़ा में निजाम, मालवा में मुगल सेनानायक गिरधर बहादुर, दया बहादुर को परास्त कर कर्नाटक, दक्षिण, खानदेश, मालवा आदि पर प्रभुत्व स्थापित किया तथा दभोई में त्रियम्बक राव को नतमस्तक किया। सन् 1737 ई में दिल्ली अभियान उनका चरमोत्कर्ष था। उन्होंने औरंगजेब के पोते मुगल सम्राट मुहम्मद शाह को दिल्ली में जाकर ललकारा और लालकिले में कैद कर लिया। मुहम्मद खान बंगस ने जब बुंदेलखंड के राजा छत्रशाल पर आक्रमण किया तब बाजीराव उनकी सहायता के लिए आ पहुंचे। बंगस परास्त कर बुंदेलखंड की रक्षा की। पन्ना में छत्रसाल की मेहमानबाजी के दौरान उनकी मुस्लिम पत्नी से उत्पन्न पुत्री मस्तानी से प्रेम हो गया। यह प्रेम कहानी परवान चढ़ी। महाराज छत्रसाल ने अपनी पुत्री मस्तानी का विवाह बालाजी राव बल्लाल से कर दिया तथा बुंदेलखंड का एक भाग बालाजी को सहर्ष अर्पण कर दिया। मस्तानी में घुड़सवारी, तलवारबाजी में पारंगत होने के साथ ही उसमें वीरांगनाओं के सभी गुण थे। वह अनिद्य सुंदरी और कुशल नृत्यांगना भी थीं। छत्रसाल की नगरी पन्ना से बाजीराव मस्तानी के साथ पूना लौटे, पर पुणे के परंपरावादी समाज में मस्तानी का स्वागत नहीं हुआ। बालाजी पुणे के चित्तपन ब्राम्हण थे। उनके परिवार एवं पुणे के चित्तपन ब्राम्हणों को मस्तानी बाजीराव की पत्नी के रूप में स्वीकार्य नहीं थी। इन हालातों में मस्तानी के विरुद्ध अनेक कुचक्र षड्यंत्र रचे गए। दोनों को अनेक परेशानियां और मानसिक क्लेश झेलना पड़ा। बाजीराव को मस्तानी के लिए अलग महल का निर्माण करवाना पड़ा। बाजीराव की पहली पत्नी काशी बाई से तीन पुत्र थे जिनमें से बालाजी बाजीराव बाद में पेशवा बना। मस्तानी से एक पुत्र हुआ जिसका नाम कृष्णराव रखा गया या शमशेर बहादुर था। जीवन के अंतिम दिनों में उसने नसीरजंग को सन् 1739 में परास्त किया तथा 1939 में ही अपने भाई चिम्मा जी अप्पा को भेज कर पुर्तगालियों को नेस्तनाबूद करवाया और बसई की संधि की। मराठा साम्राज्य का अटक से कटक तक विस्तार हो गया। अरब सागर से बंगाल खाड़ी को मराठा साम्राज्य की सीमा स्पर्श कर रही थी। बाजीराव ने जीवन काल में 41 लड़ाइयां लड़ी और सब में विजय प्राप्त की। घोड़े पर बैठकर उनकी भाले की फैंक इतनी जबरदस्त होती थी कि घुड़सवार अपने घोड़े सहित घायल हो जाता था। बाजीराव ने होल्कर, सिंधिया, गायकवाड़, पवार जैसे मराठा सरदारों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की थी जिसके फलस्वरूप इंदौर, ग्वालियर, बड़ौदा, नागपुर जैसे राज्य अस्तित्व में आए। पूना को विकसित करने का श्रेय भी बाजीराव को ही जाता है। उसने पूना में शनिवार बाडा के अलावा कोथरूड में अपनी दूसरी पत्नी मस्तानी के लिए अलग से महल बनबाया। अपनी प्रेयसी पत्नी मस्तानी के प्रेम में आकंठ डूबे बाजीराव सैनिक अभियान के दौरान बीमार पड़ गए। अंतिम समय मस्तानी से मिलने की उनकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। पश्चिमी निमाड़ के रावेरखेड़ी गांव के समीप सैनिक शिविर में भीषण गर्मी और लू के कारण उनकी हालत और बिगड़ गई। 28 अप्रैल 1740 को यही उनकी मृत्यु हो गई। रावेरखेड़ी गांव में ही पेशवा के स्वामी भक्त सिंधिया ने उनकी समाधि का निर्माण कराया। उसकी मृत्यु के पश्चात मस्तानी भी कुछ समय बाद इस दुनिया को छोड़कर चली गई। मस्तानी की कब्र पूना के पास पवल गांव में बनी है। अमेरिकन इतिहासकार बर्नाड मांटो गोमेरी ने उन्हें भारत का महानतम सेनापति बताया है। पालखेड़ा के युद्ध में जिस तरह निजाम को हराया यह बाजीराव ही कर सकते थे। रिचर्ड टेंपल के अनुसार सवार के रूप में बाजीराव को कोई मात नहीं दे सकता था। इस प्रकार इस जांबाज मराठा सेना नायक और एक प्रेम कहानी का अंत हुआ। बाज़ीराव को महान योद्धा, युद्धकर्ता पेशवा के रूप में तथा हिंदू शक्ति के अवतार के रूप में मराठे स्मरण करते हैं।

# नवाबी रंगत में ढले सेतु

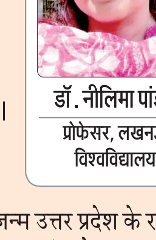

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

तहजीब का शहर लखनऊ अब ज्यादातर कुछ कुम्हलाया और उदास दिखता है। गंगा–जमुनी संस्कृति इसका ईमान और पहचान रही है। जज्बात अब भी वही हैं उत्साह में जरूर फीकापन आ गया है। मंदिर,मस्जिद,गिरजे और गुरुद्वारे में बिंधा हुआ ये शहर बार–बार नामों से की जाने वाली छेड़छाड़ से चौंकता है। इतिहास के हश्र पर ठिठकता है और कभी–कभी गुनगुना भी उठता है : 'हश्र में मेरा हाल क्या होगा, मेरी जानिब अगर खुदा होगा' जिंदगी के हर फलक पर तंगहाल दिखते हुए इस माहौल में एक दिन हमने शहर के स्मारकों का जायजा लेने के इरादे से बेहटा का रुख किया। बेहटा गोमती की सहयोगी नदी है। दोनों ही दारुण स्थिति को प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी जर्जर स्थिति मायूस करती है। नदी किनारे मलिहाबाद को बढ़ती हुई सड़क पर एक खूबसूरत सा शिवालय है,जिसे राजा टिकैतराय न बनवाया था। टिकैतराय नवाब आसफुद्दौला के दीवान थे।

दस्तावेजों से पता चलता है कि राजा टिकैतराय का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में एक कायस्थ परिवार में हुआ। नवाब सफदरजंग के शासनकाल में कायस्थ समुदाय के ज्यादातर लोग भी बहीखाते का काम देखा करते थे। लखनऊ गजेटियर से जानकारी मिलती है कि नवाबी दौर में कई कायस्थों को ऊंचे ओहदे मिले और तकरीबन सोलह को 'राजा' के खिताब से नवाजा गया। इन सोलह में टिकैतराय भी शामिल थे। विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहते हुए टिकैतराय ने शहर लखनऊ को तालाब,शिवालय, पुल और बाग के तोहफे दिए। कुछ इलाके भी उनके नाम से जाने गए। बेहटा पुल और शिवालय वाला इलाका टिकैतगंज कहलाता है। गांव है छोटा सा जहां शिवालय, बेहटा पुल और शाही इमाम मस्जिद अतीत के चश्मदीद बने ठसक के साथ खड़े हैं। आज की तारीख में महज टिकैतगंज के स्मारक ही कुछ बेहतर हालत में मिलते हैं। चहलकदमी करते हुए हमने पुल के दोनों सिरे छू लिए। उसके लखनऊ के पुलों के इतिहास को लेकर उत्सुकता हुई और फिर जानछान कर पुलों के इतिहास को शब्दों में पिरोया।

## बेहटा पुल

पुल बेहटा और शिव मंदिर राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक हैं। पुल और इससे संयुक्त मंदिर का निर्माण आसफुद्दौला के शासन काल में 1786–88 (1200–02 हिजरी) में करवाया गया था। नवाबी युग के इस मंदिर को लखौरी ईंटों से बनाया गया है। चूने के मसाले से पलस्तर कर उस पर अलंकरण किया गया है। मंदिर का तल विन्यास अष्टकोणीय है। प्रवेश द्वार पूरब दिशा में खुलता है। चारदीवारी युक्त इस मंदिर को एक ऊंचे अधिष्ठान पर बनाया गया है। इसे राजराजेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। बेहटा पर बना मेहराबदार पुल भी लखौरी ईंटों का है। पुल पांच नुकीले मेहराबों पर आधारित है। मेहराबों को विशाल स्तंभों पर रोका गया है। लखनऊ स्थित सबसे पुराने पुलों में से एक में तीन मंजिली दो अठपहल मीनारें हैं। इन स्तंभों पर संगमरमर की दो पट्टिकाएं लगी हैं। जिस पर फारसी और संस्कृत भाषा में इसके निर्माण की तिथि और निर्माता का नाम अंकित है। मंदिर के पासंग एक छोटा सा घाट है,जहां तक पहुंचने के लिए मंदिर से सीढ़ियां बनाई गई हैं।

## मंकी ब्रिज

मंकी ब्रिज का असल नाम ब्रूस ब्रिज है। मुन्सिपल अभियंता ब्रूस के निर्देशन में सन् 1865–66 ई. के बीच एक पुल बनवाया गया,जो कैसर बाग को बादशाह बाग से जुड़ता हुआ चांदगंज सड़क से गुजरता था। एक जमाने में ये सड़क चांदगंज गार्डन तक पहुंचती थी,जो अपने अमरूदों के लिए खासा जाना जाता था। सड़क तो आज भी वहीं पहुंचती है,लेकिन अमरूद का बाग नदारद है, उसकी जगह बाजार और घनी आबादी आपका स्वागत करती है। विश्वविद्यालय बन जाने के बाद ये सड़क यूनिवर्सिटी रोड कहलाई। ब्रूस ब्रिज तीन मेहराबों वाली संरचना थी। सन् 1960 तक ये पुल काम में लाया गया। उसके बाद इसे क्षतिग्रस्त होने की वजह से डायनामाइट से उड़ा दिया गया। फिर से इसी जगह गोमती नदी पर एक नया पुल बना जिसे हनुमान सेतु कहा गया। पुराने पुल के कुछ बचे–खुचे अवशेष, ईंट के खंभे आज भी देखे जा सकते हैं। इन अवशेषों के अलावा 1874 ई. में अली अब्बास की ली गई तस्वीर में पृष्ठभूमि में दिखने वाला मंदिर आज भी यथास्थान खड़ा है। ये एक शिव मंदिर है। जिस जगह ये मंदिर है उसे आज की तारीख में 'ब्रह्मर्षि श्री देवरहा घाट' कहा जाता है। ये नया नाम है। मंदिर परिसर में परिक्रमा करने पर हम पाते हैं कि पहले ये जगह 'राम घाट' कहलाती थी। पुराने घाट की सीढ़ियां, कुछ पुराने कमरे, उनके दरवाजे पर उकेरी गई मछलियां, जो कभी नवाबी आन, बान और शान थीं, ब्रूस ब्रिज के बचे हुए ईंट अवशेषों में इतिहास के लम्हें बनकर आज भी धड़क रही है।

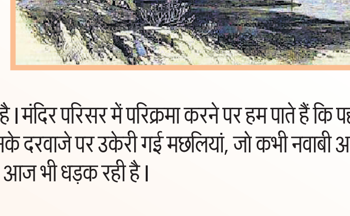

## आयरन ब्रिज

नवाब सआदत अली खान के जमाने में सन् 1812 ईसवीं में गोमती नदी पर एक लोहे का पुल बनाने की योजना बनी। नवाब साहब खुद इसके सूत्रधार थे। कप्तान मैक ल्योड ने, जो नवाब की खिदमत में थे और इंजीनियरिंग के जानकार भी, पुल का खाका तैयार किया जिसके हिसाब से पुल के हिस्से इंग्लैंड में डाले गए। अगस्त 1816 में समुद्र–नदी मार्गों से सफर तय करके लोहे का ढांचा लखनऊ पहुंचा। दुर्भाग्यवश इस दौरान नवाब सआदत अली खान जन्नत को कूच कर गए। उनके बेटे नवाब गाजीउद्दीन हैदर ने पुल के ढांचे की बनवाई के 12, 822 पाउंड और तकनीकी सलाह के 676 पाउंड ब्रिटिश इंजीनियर और उसके कारीगरों को तो चुका दिए,लेकिन उसे अपने पिता की इस ख्वाहिश में कोई दिलचस्पी न थी। सालों–साल इंग्लैंड से आया पुल का ढांचा लोहे–लक्कड़ की तरह पड़ा अपने जोड़े जाने की बाट जोहता रहा। गाजीउद्दीन हैदर के सुपुत्र नसीरुद्दीन हैदर ने पुल के निर्माण की दिशा में सकारात्मक सोच दिखाई और काम शुरू करवाया। इसकी देख–रेख नवाब के वजीर हाकिम मेहंदी को सौंपी गई, किंतु कुछ समय बाद ही संभवत: सियासी मसलों के चलतन मेहंदी साहब वजीर के पद से हटा दिए गए और पुल का निर्माण कार्य एक बार फिर अधर में लटक गया। अंतत: 1840 ई. में मुहम्मद अली शाह के समय में एक बार फिर इस पुल का निर्माण कार्य शुरू हुआ। मुहम्मद अली शाह ने 10,000 पाउंड खर्च कर आलंब देने के लिए ईंट के खंभे बनवाना शुरू किया। 1843 ई. में अमजद अली शाह नवाब हुए। उनके शासन काल में सन् 1845 ई. में लोहे के ढांचे को अंतिम रूप से व्यवस्थित किया गया। बीज रूप में आने के बाद लगभग तैंतीस बरसों का लंबा सफर तय करके पुल इस्तेमाल के लिए तैयार हुआ। यह हिंदुस्तान में बनने वाला संभवत: पहला आयरन ब्रिज था जिसकी लंबाई 200 फुट थी। लखनऊ के डालीगंज वाले इलाके में सन् 1960 ई. तक इसे देखा जा सकता था। कालक्रम में जंग लगने की वजह से यह कमजोर पड़ गया और आवागमन तथा यातायात के लिए सुरक्षित नहीं रहा। अत: इसे हटाकर इस जगह आर. सी. सी. का पुल बना दिया गया।

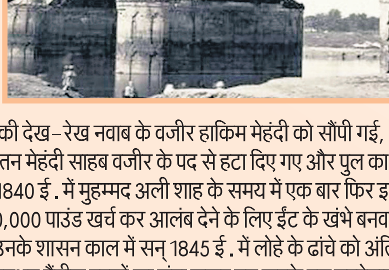

## हार्डिंग ब्रिज

हार्डिंग ब्रिज लखनवी विरासत का एक अहम हिस्सा है। लाल रंग में रंगा ये पुल निहायत ही खूबसूरत है। इसकी खूबसूरती के लिए मैजर क्रुकशैंक का हुनर तारीफे–काबिल है जिन्होंने इसका नक्शा तैयार किया। मेडिकल कॉलेज को सीतापुर जाने वाली सड़क से जोड़ता ये पुल जनवरी की 10 तारीख को सन् 1914 ई. में तैयार हुआ। उस समय भारत के वायसराय चार्ल्स हार्डिंग थे। उन्हीं के नाम पर इसे हार्डिंग ब्रिज नाम मिला। आवागमन के लिए ब्रिज को चालू करने से पहले एक जलसे में वायसराय चार्ल्स हार्डिंग के द्वारा इसका उद्घाटन करवाया गया जिसमें बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने भी शिरकत की। 103 बरस पुराना ये पुल आज भी पूरी शान–ओ–शौकत से खड़ा है। जिस जगह आज हार्डिंग ब्रिज खड़ा है वहां पहले भी एक पुल हुआ करता था। दस्तावेजों में इसे 'पक्का पुल' कहा गया है। ये सन् 1780–90 ई. के बीच बनकर तैयार हुआ। सन् 1857 ई. की गदर में 15 जून को इसे नष्ट कर दिया गया। वजह थी विद्रोहियों के आवागमन को बाधित करना। बिशप हेब्बर ने इस पुल का जिक्र किया है। हॉर्डिंग ब्रिज के बनने पर उस पर जड़े गए एक पत्थर पर भी पक्के पुल की दास्तान दर्ज थी।

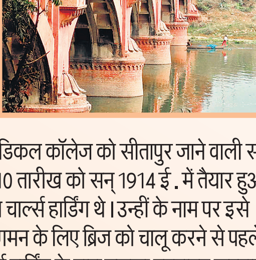

## पाइल ब्रिज

लखनऊ शहर के नवाबी सेतु-बंधों में एक और पुल है जिसे पाइल ब्रिज के नाम से जाना जाता था। ये ब्रूस गंज में गोमती नदी पर बनाया गया था। आज के समय में ब्रूस गंज को निशात गंज के नाम से पहचाना जाता है। पुल के करीब उस समय के महत्वपूर्ण लैंडमार्क्स में 'चक्कर वाली कोठी' और एक ल्युनैटिक असायलम थे। 'चक्कर वाली कोठी' के पास एक ईसाई कब्रिस्तान भी था। ऐसा एम. ए. बेग साहब अपनी किताब 'द गाइड टू लखनऊ' में जिक्र करते हैं। कोठी का तो अब कोई वजूद रहा नहीं, उसकी जगह अंग्रेजी शासन में 'कूपर पेपर मिल' ने हासिल कर ली थी। कब्रिस्तान जरूर हम देख सकते हैं। असायलम भी है जो अब सरकारी प्रशिक्षण संस्थान बन गया है। बहरहाल बरस 1891 में लखनऊ में गोमती नदी में आने वाली भयानक बाढ़ की वजह से भारी तबाही हुई और पाइल ब्रिज को खासा नुकसान पहुंचा। बाढ़ का पानी उतर जाने के बाद इसकी मरम्मत कराई गई और पुल फिर से चालू हुआ। बाद के समय में पाइल ब्रिज और ब्रूस गंज नाम सिर्फ इतिहास के पन्नों में कैद होकर रह गए। ब्रूस गंज को नया नाम निशात गंज मिला और पुल भी इलाके के नाम से जाना गया। पेपर मिल के पास एक चक्कर पुरवा नाम का आबादी वाला हिस्सा भी है, संभव है कि इस नाम की ऐतिहासिकता नसीर- उद्दीन हैदर (1827-1837) की 'चक्कर वाली कोठी' से जुड़ती हो।